

बंबईक ओ मधुर यात्रा नहि बिसरत । हमरालोकनि (प्रोफेसर श्री हरिमोहन झा, हुनक पत्नी, श्री रत्नेश कुमार झा तथा हम) गत १८ जुलाईक रातिमे 'मेल' द्वारा पटनासँ प्रस्थान कयलहुँ । एक तँ हम स्वयं हास्य रसिक, दोसर संगमे हास्य-सम्राट् प्रोफेसर साहेब । ट्रेनक ओहि छत्तीस घंटेमे विनोदक वर्षा होइत रहल से यदि संकलित कयल जाइत तँ अपूर्व हास्य-साहित्य प्रस्तुत भऽ जाइत ।

२० ता० केँ दादर स्टेशन पर उतरि हमरालोकनि सोझे अंधेरीक 'प्रकाश-स्टूडियो' पहुँचलहुँ । 'कन्यादान'क सेट तैयार भऽ रहल छलैक । सौराठमे लेल फोटोक आधारपर लालककाक घर (खड़सँ छारल माटिक घर) बनाओल गेल छलैक । ओहिना आड-न-अं-सारा, तुलसी-चौरा, ताख-पर डिविया, ढौरल भीतपर कमल ओ दही-माछक भार बूझि पड़ल जे अंधेरी नहि, अन्हरा-ठाढ़ी हो ! ओही मायानिर्मित मिथिलापुरीमे बैसि हमरालोकनि चाह पितृवत गेलहुँ ।

ओहिठाम निर्देशक फणि मजूम-दार, पट कथा लेखक नवोदु घोष आदिसँ भेंट भेल । एक बंग-महिला सेहो भेटजीह । ई पद्मा देवी (लाल-काकी) छलीह । एक व्यक्ति माथ मुड़ौने ठाढ़ छलाह । ज्ञात भेल जे ई झारखंडी थिकाह । थोड़े काल

फिल्मलोकमे किछु दिन

श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'

पहिने मुहूरतक विधि सम्पन्न भेल रहैक आ घोष साहेब स्वयं मोहूररक पाटं कयने रहथि ।

हमरालोकनि रंगशालाक अतिथि छलहुँ । आवासक नामो छलैक 'एवर ग्रीन' जतऽ सभ किछु हरियरे लगैत छलैक । कलाकार लोकनिक संग रस-रंगमय वातावरणमे पते नहि लगैत छल जे कखन दिन बीतल आ राति आयल ।

दोसर दिन स्नान-भोजन कऽ हमरालोकनि चित्रशालामे अयलहुँ तँ शूटिंग चलि रहल छलैक । लालकाकी ओ टुनमुन काकी (आगराक दुलारी बाइ) सेटपर छलीह । श्रीमती सुभद्रा जी हुनकालोकनिकेँ मैथिल-संस्कृतिक अनुरूप वेषभूषा ठीक कऽ देलथिन । ओ लोकनि मेक-अप रूममे (शृंगार भवन)मे जा बाँहिवला ब्लाउज उतारि कोचाबला साड़ी पहिरि अयलीह । तावत् बड़का गामवाली (दिल्लीक चाँद उस्मानी) सेहो पहुँचि गेलीह । हम सभ गोटेकेँ मैथिली सिखावऽ लगलियनि । लगभग बीस वर्षसँ शिक्षकक काज कऽ रहल छी,

परन्तु एहन अपूर्व शिष्यागण जीवनमे नहि भेटल छलीह । ई लोकनि मैथिली बजबाक कोन कथा सुननहुँ नहि छलीह । दुलारी पाठ रटऽ लगलीह—सँह तँ हमहुँ कहै छी । पद्मा देवी अभ्यास करऽ लगलीह—अय कनियाँ, सुनै छी ? चाँद उस्मानी कुहकऽ लगलीह—की कहै छथि ?

अन्य भाषा-भाषिणीक मुँहसँ मैथिली केहन प्रियगर लागि सकैत छैक तकर अभूतपूर्व अनुभव होबऽ लागल । एहन मधुर पाठशालामे के नहि गुरुअइ करय ? एक तँ मैथिली स्वयं मधुर, ताहिमे किन्नरी ओ गंधर्व-कन्याक कंठ ! सोनमे सुगन्धि ! ध्वनि-उच्चारण शुद्ध करबामे भगीरथ प्रयत्न अवश्य करऽ पड़ल, परन्तु ओहिसँ जे आनन्द-गंगा बहरयलीह से मन-प्राणकेँ शीतल कऽ देलनि ।

तेसर दिन हीरोइन (बंबईक लता सिन्हा) सेहो विमान द्वारा मद्राससँ पहुँचि गेलीह । लते जकाँ नमछरि, छरहरि, चंचला । स्टूडियोमे हमरालोकनिक बीचमे आबि बैसि

गेलीह । परिचय कराओल गेलनि । प्रोफेसर साहेब हुनक मुख्य भूमिकाक सारांश अंग्रेजीमे बुझा देलथिन जे पहिने (इंटरवल धरि) अहाँ प्रायः बाला रहव, पश्चात् नगर-वाला बनव । ओ खुशीसँ उछिलैत बज-लीह—O.K. (वेस, बड़ बढियाँ) । तावत निर्देशक सोर कयलथिन । लता हरिणी जकाँ दौड़ैत सेटपर गेलीह । अभिनय कलाक जादू देख-लहुँ । देखैत-देखैत ओ खाँटी मैथिल कन्या बनि गेलीह । माइक भएँ ब्रस निहूरलि, सकुचलि । लालकाकी पुछलथिन—अयँ गय ! तोँ कतऽ गेल छलेँ हँ ? लता नहुँ-नहुँ आइ रूखँ आँचर खोसैत बजलीह—भालसरीक फूल वीछऽ गेल छलिकैक ।

ओम्हर कै मराक पलैश आ कट । लता दौड़लि पुनः प्रोफेसर साहेब लग अयलीह । पुछलथिन—*How I have done?* प्रोफेसर साहेब वात्सल्य भावसँ पीठ टोकेँत कहल-थिन—*Excellent* (सुन्दर) !

तदनन्तर बुच्चीदाइक एक सखी (पंजाबक मिस रत्ना) अयलीह । समुरास बेटीक भूमिकामे । ऐँचैत-मँचैत, लाजे सकुचैत, लालकाकीक पयर छबि प्रणाम कयलथिन । ओ पुछलथिन—की हे दाइ ! कहिया अयलीह ? ई छबि-छटासँ लजाइत उत्तर देलथिन—काल्हिए सँझका ट्रेनसँ आयल छलिकैक, काकी !

तदुत्तर ओ बुच्चीदाइक बाँहि धयने चलि गेलीह । दुनू सखी जोर-खट्टापर बैसि ताश खेलाय लगलीह । रत्ना पुछलथिन—“कखन पत्ती फेकबेँ ?” ‘बे’क ध्वनि ठीक करबामे हमरा बारंबार ‘बे’, ‘बे’ करऽ पड़ल । परन्तु अन्तमे पंजाब-कन्या

‘कन्यादान’ फिल्ममे भारतक समस्त भाषा मैथिलीक अंचलमे एकत्र भऽ गेल अछि । हिन्दी, उर्दू, बंगला, गुजराती, मराठी, पंजाबी आदिक रंग-विरंगी पुष्प ओ कलिका सभ जेना मैथिलीक सूत्रमे गँथाकऽ माला बनि गेल हो । . . . आ सभमे एहन पारस्परिक प्रेम जेना एक्के आश्रमक, एक्के परिवारक होथि ।

तहिना बाजऽ लगलीह जेना पंचोभ-
कन्या !

एहन आशातीत सफलता देखि
प्रोफेसर साहेब गद्गद् भऽ उठलाह ।
हमरालोकनिकेँ स्वप्नोमे विश्वास
नहि छल जे ई बंबइया अभिनेत्री-
लोकनि मिथिलाक मधुकुपिया सन
मीठ मैथिली बाजि सकतीह । शूटिंगक
पश्चात् निर्माता-निर्देशक श्री कला-
कार सभक संग हमरालोकनिक ग्रुप
फोटो भेल ।

‘कन्यादान’ फिल्मक एक बड़का
आकर्षण ई जे भारतक समस्त भाषा
मैथिलीक अंचलमे एकत्र भऽ गेल
अछि । हिन्दी, उर्दू, बंगला, गुजराती,
मराठी, पंजाबी आदिक रंग विरंगी
पुष्प ओ कलिकासभ जेना मैथिलीक
सूत्रमे गँथाकऽ माला बनि गेल हो ।
बंबइक बेटी, गुजरात ओ महाराष्ट्रक
बहिनपा, बंगालक माय, आगराक
पितृआइन, दिल्लीक भाउजि । आवेश-
रानी (मिसेज कपूर) पंजाबक आ
मिस विजली (खुरशीद) हैदराबाद
युनिवर्सिटीक ! प्रायः हिमाचलसँ
कन्याकुमारी पर्यन्तक कलाकार !
आर सभमे एहन पारस्परिक प्रेम
जेना एक्के आश्रमक, एक्के परिवारक
होथि !

रंगशालामे मधुर हाम-परिहास
होइत रहैत छलैक । एक दिन दुनदुन
पहुँचलीह । प्रोफेसर साहेब कहल-
थिन—अहाँ पटना आयल रही तँ
कविता सुनौने रही—“मैं जबसे आई
पटने, मेरा वजन लगा है घटने”, मे
एक बेर फेर सुना दियऽ । ओ गाँविकऽ
सुनावऽ लगलीह आ एक-एक पंक्तिपर
ठहाका पड़ऽ लागल । प्रोफेसर साहेब
कहलथिन—अहाँ पनिभरनीक पार्ट
लेने छी, कनेक घँल लेने खुसि पड़बैक
तँ दर्शककेँ मजा आवि जयतनि ।
ओ नखरा करैत उत्तर देलथिन—
आ हमर जे डाँड़ टूटि जायत से... ?
एक आर दृष्टान्त लियऽ ।

प्रोफेसर साहेबकेँ पटना जयबाक



प्रो० हरिमोहन झा (कन्यादानक लेखक), पद्मा (लालकाकी), रत्नेश, श्रीमती सुभद्रा झा (लेखकक पत्नी), अमरजी
(लालकाका), लता सिन्हा (बुच्च दाइ), फणि मजुमदार (निर्देशक), रत्ना (बिलटो), दुलारी
(हुनमुन काकी) तिवारी ।

रहनि । विदाक उल्लस्यमे एक थार
गुलाबजामुन आयल । पद्मा देवी (लाल
काकी) परसऽ लगलीह । प्रोफेसर
साहेबक आगाँ भरि आँजुर उझील
देलथिन । हम लालकाकाक भूमिकामे
रही । तँ परिहास कयलियनि—अय !
अहाँकेँ पहिने हमरासँ शुरू करबाक
चाही कि... ? ओहो तुरंत ओही
स्परिटमे उत्तर देलनि—अहाँ तँ
घरबँया छी । धैर्य राखू ।

ओम्हर प्रोफेसर साहेब भावा-
वेशमे आवि लता सिन्हाकेँ
कहलथिन — बुच्चीदाइ !
You are my creation, take
one sweet from me. (अहाँ

हमर सृष्टि छी, एकटा मधुर हमरा
हाथेँ लियऽ ।) लता तुरंत हुनका
हाथसँ गुलाबजामुन लैत बजलीह—
Then let us share half-half.
(तखन दुनू गोटे आधा-आधा बाँटि
ली ।) ओ चट दऽ गुलाबजामुनकेँ
बीचसँ तोड़ि, आधा प्रोफेसर साहेबकेँ
दैत आधा अपना मुँहमे राखि लेलनि;
शिशु जकाँ निश्छल, निर्मल, निर्वि-
कार । ओहि प्रेमनगरीमे एहने माधुर्य
वृष्टि होइत रहैत छलैक । एहि
प्रकारक स्नेहमय वातावरण अन्यत्र
दुर्लभ ।

चलबा काल पुनः सभक सामूहिक
चित्र लेल गेल । विदा होयबाकाल

प्रोफेसर साहेब विनोदपूर्वक कहलनि—
देखब अमरजी, ई बंबइ कतहु अहाँक
ठोप मेटाकऽ ठोप नहि पहिरा देअय ।
हमहुँ हँसैत उत्तर देलियनि—यदि
भगवतीक कृपा रहलनि तँ ठोपे सभपर
ठोपक छाप लगौने अयबनि ।

आ सरिपहुँ ओहि अंधेरीमे तेहन
प्रकाश पहुँचि गेल जे प्रकाश-स्टूडियो
मैथिलीमय भऽ गेल । आब ओहि
छायालोकसँ अयलापर बूझि पड़ैत
अछि जेना छायावादी कविताक
श्य मल घटा ओ इन्द्रधनुषवला
आकाशसँ पृथ्वीपर उतरि गेल होइ,
जेना रोमांटिक पद्यसँ ठेठ गद्यपर
आबि गेल होइ ।

मिथटोला, दरभंगा ।

आस्वस्थ भेल । फेर भगवान कहल-
वन,—“पटाचारे, जाहि तरहे”
पाइ पुत्र, पति, माय, बाप, भाय आदिक
तु तो नोर बहा रहल छै” साही तरहे”
जन्म-जन्मान्तरमे जतेक नोर बहल
येत । सभक संग्रह समस्त समुद्रक
जलोसँ बेसी होयतक । पटाचारे
पुत्रादि तोहर शरण नहि भऽ सकैत
ह । जखन मृत्यु मनुष्यकेँ पकड़ि
तै छैक तखन पुत्र, पिता वा अन्य
आन्धव ओकर रक्षा नहि कऽ सकैत
छि । पटाचारे, तो” शीलक पालन
र जाहिसँ तोरा मोक्षक मार्ग प्राप्त
येतकी ।”

भगवानक उपदेश सुनि पटा-
चाराक ज्ञान-दृष्टि खुजि गेलैक । ओ

भिक्षुणी भऽ साधनामे लीन भऽ गेल ।
थोड़बेक समयमे ओकर गरणा विमुक्त
जन्ममे होबऽ लगलैक । पटाचाराक नाम
चतुर्दिक पसरि गेलैक । जीवनसँ
निराश, परित्यक्ता एवं संतप्ता स्त्री
सभक ओ आश्रय स्थान बनि गेल ।
ओ अपने सनक संतप्त हृदया पाँच
सय तीस महिलाकेँ भिक्षुणी बना
धर्माचरणमे लगौने छलीह । दुखी
जीवनसँ विमुक्त भेलापर पटाचाराक
एकटा शिष्या चन्द्रा अपन उत्साह
गीतमे कहैत छथिः—

दुःगताहं पुरे आसि,
विधवा च अपुत्तिका
विना भित्तिहि जातोहि
भक्तचोलसस नाधिगं

पत्तं वण्डं च गृहित्वा
भिवलमाना कुला कुलं
सीतुहेन च डाहती
सत्त वस्त्रानि चारिहं
सा च मं अनुकम्पाय
पद्वाजेसि पटाचारा
ततो मं ओवादिद्वान
परमार्थं नियोजयि
तस्साहं वचनं सुत्वा
अकासि अनुसासनि
अमोघो अथ्यायोवादो
तेविज्जामिह अनासवाति

अर्थात् हम निस्संतान विधवा
अत्यन्त कष्टमय जीवन बिता रहल
छलहुँ । ने हमर क्यो मित्र छल ने
जातिबन्धु । भोजन-वस्त्रक सेहो

उपाय नहि छल । भिक्षापात्र आ
लऽ कऽ हम घरे-घर भोजन-मद
घुमैत रहैत छलहुँ । गर्मी हो या सर्द
हम सब ऋतु सात वर्षधरि
प्रकारेँ मडैत-खाइत रहलहुँ । भिक्षा
पटाचारा दयापूर्वक हमरा भिक्षा
बनौलनि । फेर उपदेश कऽ हम
परमार्थमे लगौलनि । हुनक कथ
सुनि हम हुनका अनुशासनकेँ
कयलहुँ । ओहो, पटाचारा देखि
उपदेश अमोघ छलनि । हम
तीनू विद्याक जननिहारि आ समस्त
चित्त मलसँ विमुक्त छी ।

उधरा, दरभंगा ।

विहारक राजधानी पटनामे

ही मासक आरम्भमे अखिल भार-
तीय प्राथमिक शिक्षक संघक सातम
धिवेशन सम्पन्न भेल अछि । एकर
अध्यक्षता विहार विधान सभाक
अध्यक्ष श्री लक्ष्मीनारायण ‘सुधांशु’
कयलनि । प्रथम दिनुक कार्यारम्भ
भोजना आयोगक सदस्य श्री बी० के०
सी० राव तथा दोसर दिनुक कार्या-
रम्भ विहारक माननीय राज्यपाल
श्री अनन्त शयनम् आर्यंगर साहेब
कयलनि । एहि अधिवेशनक स्वागता-
ध्यक्ष छलाह विहारक माननीय शिक्षा-
मन्त्री श्री सत्येन्द्रनारायण सिंह ।
एहि अवसरपर शिक्षा विभागक
अवकाश प्राप्त निदेशक पण्डित राम-
शरण उपाध्याय एवं भागलपुरक क्षेत्रीय
शिक्षोपनिदेशक श्री हरिनन्दन चौधरी
अपन-अपन मूल्यवान विचार व्यक्त
कयलनि ।

श्री सुधांशुजी शिक्षाक मुख्य
उद्देश्य मनुष्य बनायबकेँ कहैत छथि
आ हुनक मत छनि जे कमसँ कम ई
काज तँ शिक्षण संस्थामे नहियेँ भऽ
रहल अछि, तखन की भऽ रहल अछि
तकर उत्तर शिक्षण संस्था अथवा
शिक्षार्थी समाजक बीच पसरल अनु-
शासनहीनते कहि सकैत अछि ।

विद्याक साक्षात् फल थिकैक
विनम्रता ‘विद्या ददाति विनयम्’
किन्तु ठीक तकर विपरीत उच्छृं-
खलताक बाढ़ि सम्पूर्ण समाजकेँ
भसिया कऽ गर्तमे खसा देवाक हेतु
बढ़ल जा रहल अछि । ई बाढ़ि केवल
शिक्षक क्षेत्रमे अछि से नहि कहल
जा सकैछ । व्यापारिक क्षेत्र हो वा

शिक्षा-समस्या आ मैथिली

— श्री चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’—

औद्योगिक, राजनीतिक क्षेत्र हो वा
सामाजिक सभठाम यह गति देखबामे
आवि रहल अछि, प्रत्युत राजनीतिक
क्षेत्रमे एकर सभसँ अधिक परिमाण
देखल जा रहल अछि ।

नैतिक शिक्षाक आवश्यकतापर
सेहो श्री सुधांशुजी जोर देलनि अछि ।
एहि शब्दक व्युत्पत्तिपर दृष्टिपात
कयला सन्तों स्पष्ट होयत जे जाधरि
नीति पवित्र नहि रहत ताधरि नैति-
कतामे पवित्रताक कल्पना कोना

अधिकारीवर्गक दृष्टिमे संस्कृत शिक्षा
प्राप्त व्यक्तिक जे सम्मान छनि से
एहीसँ स्पष्ट अछि जे संस्कृतज्ञ लोकनि
अपन अभाव अस्त जीवनसँ शिक्षा
ग्रहण कऽ अपना धीयापूताकेँ एहि
शिक्षा दिस प्रवेश नहि होवऽ दैत छथि ।

एहिठाम एक पुरोहित द्वारा
कहल एक बात स्मरण भऽ आयल
अछि । प्रसंगतः एतदिन एक पुरो-
हित कहलनि जे समाजमे प्रत्येक
वर्गक पारिश्रमिकमे किछु ने किछु

सम्पूर्ण संसारक शिक्षाशास्त्री एहि सिद्धान्तकेँ हृदयसँ स्वीकार करैत
छथि जे खासकऽ माध्यमिक शिक्षाधरि मातृ-भाषा शिक्षाक माध्यम होय-
बाक चाही । मुदा मैथिलीमे आइधरि साहित्यिक पुस्तकक अनुवाद नहि
कराओल गेल अछि ।

कयल जायत ? नैतिकताक विकास
निर्भर रहैछ समाज एवं परिवारक
घातावरणपर तथा एकर अच्छेब
सम्बन्ध अछि श्रेष्ठ जनक आचरणसँ
केवल पोथीसँ एकर विकासक आशा
करब दुराशा मात्र सिद्ध होयत ।
पोथीसँ जे आंशिक नैतिकता छात्रमे
आवि सकैत छनिसे संस्कृत शास्त्रक
मन्थन कयला उत्तर किन्तु संस्कृतक
उत्थान एवं अध्ययन अध्यापनक
नामपर जे किछु चल रहल अछि से
भगवाने जनैत छथि । समाज अथवा

वृद्धि भेबे कयलैक, किन्तु हमरा
लोकनिकेँ पाँचो पाइ जे यजमानसँ
दक्षिणा भेटैत छल से आव तीन पाइ
भऽ गेल, कारण जहियासँ नवका पाइ
चललैक तहियासँ नवके पाँचपाँसाही
पाँच पाइक स्थान ग्रहण कऽ लेलक
अछि । यह दुर्दशा अछि संस्कृतज्ञ
लोकनिक समाजमे ।

अतः यदि नैतिकताक जड़ि
उकलन करवाक अछि तँ जतऽ एक दिस
सामाजिक ओ पारिवारिक वाता-
वरणक परिष्कार अपेक्षित अछि ततऽ

दोसर दिस संस्कृत शास्त्रकेँ शिक्षा
अनिवार्य अंग बनायब सेहो नितान
आवश्यक बुझबाक चाही ।

श्री सुधांशुजी वजलाह अछि जे
वर्तमान शिक्षा पद्धति त्रुटिपूर्ण अछि ।
ई कथा आइसँ दशाब्दोसँ बेसी पहिले
भारतवर्षक भूतपूर्व राष्ट्रपति स्व०
देशरत्न डाक्टर राजेन्द्र प्रसादसँ नः
बड़का बड़का शिक्षाशास्त्रीलोकनि
वर्जत आवि रहल छथि । हिनका-
लोकनि नेता थिकाह, देशक भाषा
विधाता थिकाह । वस्तु-स्थितिकेँ
नीक जकाँ बूझि रहल छथि आ जे
बुझैत तथा अनुभव करैत छथि
से सार्वजनिक मंचसँ बजितो छथि,
किन्तु कार्यान्वयनक काल अगलापर
ई सभ बात विसरि जाइत छथि ।
तखन एहि हेतु दोषी केँ ? एहि सुधार
करबाक कार्यमे व्यवधान कोन ?
बाधा की ? शिक्षक, समाज अथवा
अधिकारी ?

माननीय राज्यपाल महोदय शिक्षक
तुलना महर्षि विश्वामित्रसँ करैत
हुनका लोकनिसँ राम लक्ष्मणक
निर्माण करवाक आग्रह कयलनि
अछि । हम विनम्र शब्दे निवेदन कर-
बनि जे आनुक शिक्षक विश्वामित्र
बनबाक चेष्टा कैंयो सकैत छथि,
किन्तु शासक दशरथ बनबाक हेतु
उद्यत छथि ? जखन विश्वामित्र
राम लक्ष्मणकेँ माडक हेतु राजा
दशरथक दरबारमे पहुँचल छलथि
तँ प्राण-प्रिय पुत्र लोकनिकेँ पल मात्र
आंखिक परोक्ष रखबासँ अक्षम दशरथ
विश्वामित्रक भयसँ एकोधेर नकारक
(शेष पृष्ठ २२ पर)

शिक्षा-समस्या आ मैथिली

(पृष्ठ १२६ शेषांश)

उच्चारण करवाक साहस नहि कऽ सकलाह, उपदेश देवाक तँ चर्च कोन । किन्तु आजुक शिक्षक एक किरानीक कृपा प्राप्त करवाक हेतु घंटाक घंटा किरानीक कुर्सी लग ठाढ़ रहैत छथि आ किरानी बाबू कनडेरियो तकबाक हेतु उद्यत नहि होइत छथिन ।

सम्पूर्ण संसारक शिक्षाशास्त्री एहि सिद्धान्तकेँ हृदयसँ स्वीकार करैत छथि जे खास कऽ माध्यमिक शिक्षा-धरि मातृभाषा शिक्षाक माध्यम होयबाक चाही । विहारो सरकार एकरा स्वीकार कऽ चुकल अछि आ एही सिद्धान्तक आधारपर सरकारी टेक्स्ट-बुक कमीटी सभ विषयक पुस्तकक अनुवाद हिन्दी, उर्दू, बंगला तथा उड़िया पर्यन्तमे करितो मैथिलीमे आइधरि साहित्यिक पुस्तकक अनुवाद नहि करौलक अछि । की एहि नग्न सत्यकेँ विहार सरकार अस्वीकार कऽ सकैत अछि ? जखन सिद्धान्तक अवहेलना एहि प्रकारेँ होइत हो तखन यदि शिक्षा-पद्धति त्रुटि पूर्ण नहि रहय सँह आश्चर्य ।

शिक्षक संघ एक प्रस्ताव पारित कऽ केन्द्रीय सरकारसँ प्राथमिक शिक्षा केँ केन्द्रक अधीन कऽ लेबाक अनुरोध केन्द्रीय सरकारसँ कयलक अछि । आवश्यक तँ ई अछि जे विश्वविद्यालयक क्षेत्रकेँ छोड़ि गेप सम्पूर्ण शिक्षाकेँ केन्द्र अपन अधीन कऽ लेत । शिक्षक संघक महासचिव श्री जगदीश मिश्र जे स्पष्ट शब्दमे बजलाह अछि जे विहारमे शिक्षाक क्षेत्रमे राजनीतिज्ञ सभक अनधिकार ओ अनुचित हस्त-क्षेप अपन चरम सीमापर पहुँचि गेल अछि, एकर एक ज्वलन्त उदाहरण मैथिलीक उपेक्षा सेहो थिक अन्यथा विगत पन्द्रह वर्षसँ मातृभाषाक माध्यम स्वीकार कयलो उत्तर मैथिलीमे पाठ्य ग्रन्थक निर्माण किएक नहि भेल ? ई पुछबाक अधिकार एहि लोकतान्त्रिक युगमे प्रत्येक नागरिककेँ साविधान द्वारा प्राप्त छैक ।

यदि शिक्षा-शास्त्रीसँ लऽ शिक्षा-धिकारी ई अनुभव करैत छथि जे प्राथमिक शिक्षाक जे वर्तमान रूप अछि सँह रहि गेल देशक भविष्य अन्धकारमे पड़ि जायत, तँ ई नितान्त अपेक्षित अछि जे केन्द्र एहिपर गंभीरतासँ विचार करय । अन्यथा शिक्षक

संघ द्वारा देल गेल एहि चेतनीकेँ जे पन्द्रह वर्षक बादो यदि राष्ट्रकेँ एहने विफलता हाथ लगलैक तँ तकर उत्तरदायित्व शिक्षक अपनापर नहि लेताह, सर्वथा समीचीन मानल जायत ।

हर्षक बात थिक जे अहमदाबादमे केन्द्रीय शिक्षामंत्री एम्. सी. छागला जनौलनि अछि जे सम्प्रति प्राथमिक विद्यालयमे जे पाठ्य पुस्तक अछि तकर स्तर असन्तोष जनक अछि । तँ केन्द्रीय सरकार दिल्लीमे पाठ्य-पुस्तकक रचना करा रहल अछि जाहिसँ विभिन्न क्षेत्रीयमे ओकर अनुवाद भऽ सकय ।

विहारक सभसँ अधिक जनसंख्या वला क्षेत्र मिथिलाक हेतु मैथिली माध्यम स्वीकार करितो आइधरि अधिकारीलोकनि द्वारा एक उपेक्षा होइत आवि रहल अछि सँह यदि भविष्यमे होइत रहल तँ एह योजनासँ मिथिलांचल लाभान्वित होयबासँ वंचिते दहि जायत । अतः आवश्यक अछि जे केन्द्रीय सरकारक ध्यान एहि उपेक्षा दिस आकृष्ट होयबाक चाहिएक । वस्तुतः ई काज मैथिली भाषी क्षेत्रक जन-प्रतिनिधि लोकनिक थिकनि । की हुनकालोकनि एकरा अपन कर्तव्य एवं उत्तरदायित्व बूझि एहि दिशामे कटिबद्ध होयबाक हेतु सचेष्ट होयताह ?

मिश्रटोला, दरभंगा

काव्यक प्रयोजन

(पृष्ठ १२६ शेषांश)

प्रतिपादनमे सभदिन समन्वयवादी रहलाह । ओ काव्य प्रयोजनक चर्चा करैत कहैत छथि जे धर्म, अर्थ काम आ मोक्षक हेतु काव्य-सृष्टि कयल जाइत छैक; अर्थात् दोसर शब्दमे कहि सकैत छिएक जे काव्यक प्रयोजन छैक चारू प्रकारक पुरुषार्थक प्राप्ति । आचार्य भिखारीदासक कथ्य छनि जे काव्यक प्रयोजन अछि बुद्धिमान् आ सहृदयकेँ सभठाम सुखदायी बनायब ।

आधुनिक समीक्षा-संसारमे आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, डॉ० हजारी-प्रसाद द्विवेदी, डॉ० नगेंद्र, डॉ० नन्ददुलारे वाजपेयी तथा डॉ० गुलाब-राय प्रभृति विद्वान् काव्यक प्रयोजन-पर अपन मत प्रकट कयलनि अछि । शुक्लजी काव्यक प्रयोजन मनोरंजन-मात्र नहि बूझि जगतक वस्तुसँ मनुष्य

हृदयक सामंजस्य-स्थापन मानैत छथि । द्विवेदीजीक मतमे काव्यक प्रयोजन मनुष्यकेँ दुःखकातर, संवेदनशील, आत्म-तेजोदीप्त करब तथा दुर्गति, हीनता आ परमुखापेक्षितासँ बचायब होयबाक चाही । वाजपेयीजी साहित्यक प्रयोजन आत्मानुभूतिकेँ प्रकट करब मानैत छथि । डॉ० नगेंद्रक मत सेहो एहने छनि । गुलाबरायजी एहि मतक समर्थन कऽ गेलाह अछि । उक्त आचार्यलोकनिक मतक सारांश ई जे काव्यक प्रयोजन आत्म-प्रकाशन थिक । यद्यपि ई मत सुन्दर आ स्पष्ट अछि, परंच काव्यक प्रयोजन एतबे नहि मानल जा सकैछ ।

पाश्चात्य विद्वानक मत

पाश्चात्य साहित्य-विचारक सेहो काव्यक प्रयोजनपर विचार कयलनि अछि; जेना—ब्रेडले, आक्सर वाइल्ड, स्पिनगर्न आदि-आदि । एतऽ समया-भाव आ स्थानाभावक कारणेँ हुनका-लोकनिक सिद्धान्तक तथ्यमात्र उपस्थित कयल जा रहल अछि । काव्य-प्रयोजन-संबंधी हुनकालोकनिक मत एहि प्रकारेँ अछि—‘कला कलाक लेल’, ‘कला जीवनक हेतु’, ‘कला जीवनसँ पलायनक निमित्त’, ‘कला जीवनमे प्रविष्ट होयबाक लेल’, ‘कला सेवाक हेतु’, ‘कला आत्मानुभूतिक लेल’, ‘कला आनन्दक हेतु’, कला विनोदक निमित्त’ तथा ‘कला सृजनक आवश्यकताक पूतिक हेतु’ आदि-आदि । परन्तु हिनकालोकनिक मत एकाङ्गी छनि ।

पाठकक दृष्टिमे काव्यक प्रयोजनः— पाठकलोकनि प्रायः काव्यक अध्ययन दू दृष्टिसँ करैत छथि! एक तँ आनन्द प्राप्तिक लेल आ दोसर ज्ञानक अभिवृद्धिक हेतु । किछु पाठकक प्रयोजन दुनू प्रकारक सिद्धि भऽ सकैत छनि । ई तँ पाठक विशेषपर निर्भर करैछ ।

हमरा मतमे काव्यक मुख्य प्रयोजन थिक मानवताक सुरक्षा । साहित्यकारक शब्द - तुलिकाक माध्यमसँ हमरालोकनिक संस्कृतिक आ सभ्यताक चित्र काव्यक पृष्ठपर सर्वांग सुन्दर रूपमे अंशित भऽ सकैत अछि । जाधरि मानव-जीवनक अस्तित्व रहतैक ताधरि काव्यक ई प्रयोजन अपेक्षित रहत ।

नाजिरपुर, भाया मधुबनी, दरभंगा ।

मोलियरक डोन जुआँ

(पृष्ठ ८६ शेषांश)

दीमाँची—निस्सन्देह, एहि कृपा अधिकारी हम नहि, मुदा महाशय ।

जुआँ—ओह, बेकार बान, महाशय, दीमाँची, की अपने हमरा संगे जलपान कयल जयतैक ।

दीमाँची—नहि महाशय, हमरा तुरन्ते घर आपस जायब अत्यावश्यक अछि । हम. . . .

जुआँ—(उठैत) आ जल्दी महाशय दीमाँचीकेँ इजोत देखयक लेल एकटा टाच ले’ आ चारि पौन नोकर हथियार ले’ हुनक रक्षा करिय. हुन. . . .

दीमाँची—(उठैत) महाशय, एकर आवश्यकता नहि । हम एकसरे जा सकैत छी । मुदा. . .

(एस्गानरेल शीघ्रतासँ सीट हटा दैत अछि)

जुआँ—नहि, ओ लोकनि अपनेक रक्षा करत । हम अपनेक सुरक्षाक लेल बड़ चिन्तित छी । हम तँ अपनेक गुलाम छी आ ताहूसँ विशेष अपनेक कजँखोर ।

दीमाँची—आह, महाशय. . .
जुआँ—एकरा हम नुकर्त नहि छी आ हम सभ व्यक्तिकेँ कहि सकैत छी ।

दीमाँची—मुदा. . .

जुआँ—यदि अपने चाहि तँ घर धरि संग दी ?

दीमाँची—आह महाशय, सपने तँ हँसी कऽ रहल छी, महाशय ।

डोन जुआँ—तखन आउ, प्रेमा-लिंगन करू । हमर अनुरोध अछि ! पुनः अपनेकेँ विश्वास दियबैत छी जे हम पूर्णतः अपनेक छी आ संसारमे किछयो नहि अछि, जे अपने नहि कऽ सकैत छी ।

(डोन जुआँक प्रस्थान)

अंग्रेजी विभाग, च० मिथिला कालेज, दरभंगा ।

जन्मक जादे जनिक पिताके
दू कटामे
साँठ मोन कुसियार उपजलनि
साल भरिक लंगड़-झंगड़के
साफ करक हित
ई सुन्दर संयोग तुल्यलनि
तेँ प्रसन्न भऽ पिता बँचारे
दुःख हरण झा नाम रखलथिन !
घर-बाहर आनन्द-वधावा,
ढोल-चमक्का होइते रहलनि
सत्रह दिनधरि सौँसे टोलक
स्त्री समाज सड, सोहर गौलनि,
लंगुआ-भगुआ
माय बापसँ खुसनामाभे
राखल धयल धरोहर पौलनि ।
मुँडनसँ उपनयन धरिक संस्कार सभहिमे
खेत-पथारो बेचि
हजारक खर्च जुटौलनि ।
दू हजार गनवाय
हाथ पीयर कऽ बेलथिन
पन्ध्रह बरखक होइत पुत्र बालिग भऽ गेलथिन
आइ.नमे कनेजा
बाहरमे पुत्र दुलारु,
हुनू प्राणी अपनै,
मस्त रहथि मिलि चारु ।
भऽ प्रवेतिकोत्तर्ण, महाविद्यालय अबिते
भेलनि पिताक मनोरथ जेँ दरभङ्गा टावर
तँ पुत्रक अभिलाष-
कुतुब मोनारे बूझ ।
बुझलथिन बाप-“लोखि-पड़ि बीआ
खूब कमयता’
सोचऽ लगला--
‘हमर त्यागसँ देशक कायाकल्प भेल’ अछि ?’
बुझि पड़लनि जे रोम-रोममे
पौरुष-बिजुरी कड़कि रहल अछि ।
शिक्षक थिक पुल्लिग शब्द एतबा निःसंशय,
तेँ प्रयोग करबाक बुद्धिय
सोचि एक दिन
जाय वर्गमे छटियाकेँ चोटिआबऽ लगला
मारि चाटसँ, मारि चाटसँ,
चटचट चटचट शब्द
जेना तबला बजैत हो
‘कत् तट घिघितट
कत कत घिघितट
कत गदिन धा, कत गदिन धा’
छौड़ा सभसे सातो स्वरमे गाबि रहल छल
‘सा-रे-गा-म-पा-ध-नी-सा
सा-नी-ध-पा-म-गा-रे-सा’
रहि-रहिकऽ धँवत स्वरमे
सभकेँ डँटत श्री
आ निबादने नैनात्म मिलि
चिकरि रहल छल ।

एही सङ्गीतक तरङ्गमे
रहय तरङ्गित वर्ग
प्रधानक चरण पहुँचलनि,
जे प्रधान चरवाही करथिन एक झुण्डकेर
जाहि झुण्डमे
बारह सय वानर चरैत अछि
कवनो नोचनि टोक, रनि पाछुसँ धक्का
किंतु बनल ई जामवन्त उद्देश्यक पक्का
किछुकेँ होहकारि
तथा पुचकारि किछुकेँ
किछुकेँ डण्ट मारि रखै छथि अनुशासनमे
ताहि प्रधानक चरण पहुँचि
पड़लनि कसिकऽ डाँट आँत ऊपर चाँड़ अपलनि
कपलनि हुनू टाड,
लपकि टेंबुल बाँड़ धयलनि
थिक शिक्षक स्त्रीलिग तुरत से संशय भेलनि
दाँत निपोड़ि खुसामद करिने साँझ बितौलनि
राति बितैत पहुँचला जखने डेरा दुखरन
आइ.नवाली चुल्लासँ ठनने छलथिन रन,
देखिने हिनका भन-भन-भन-भन करऽ लगलथिन
‘न डिबियामे तेल, न जारनि एक्को काठी
हत्या कयलनि बाप हमर, बुझि छागर पाठो
पुरुष मसोमातक पालाँ दऽ गरदन कटलनि
दू हजार टाका ताहपर काँटर गनलनि
जरल मनक सभ सख, हकने हम कनैत छी
कि बितैत अछि भीतरमे अपनै जनेत छी
वज्र खसौ, एहि घर-दुआरमे सगौ पसही
ओड़व-पहिरब कहाँ जरय पेटो अगड़ाही
फलाँ सिंहक बँटो चिल्लाँ झाक पुतहुकेँ
देखै छिए पहिरने हम नयलोनक साड़ी
हमरासभहिक पेट छुटल भऽ गेल बखारी’
होमऽ लगलनि, दुखरनपर ओड़रपर ओड़र
‘चाही साबुन, तेल, आलता, बिन्दी, पोडर
नहि तँ नाक कटाय देब हम हुनू वंशक
एतबा राखू मोन थिकहुँ हम बेटी कंसक ।’
ताकथि हुनू जेब मुवा छनि तीनू खाली
होइत छनि--‘थिक नीक जहर माहुर बरू खा ली’
लागल गराँ बकौर,
मारि रहला अछि मटकी
भ्रमर एतऽ छथि ठाढ़
कमलिनो कोसनि फटकी ।
आ बटा आइ० ए० एस०मे कम्पोट करक हित
मने मने दश मोन गूड़ आ चाउर फकलथिन ।
नव स्वतन्त्रतालोक पाबि
श्रीदुःख हरण झा केर दशापर
पड़लनि कोन प्रभाव
ताहिपर ज्ञान-दृष्टि निक्षेप करथु
निष्पक्ष सुधी जन ।
सभसँ पहिने पार हकारे भेलनि नामसँ
पुनि विसर्ग उत्सर्ग भेल जनताक नामपर
(शेष पृष्ठ २५ पर)

राष्ट्र-निर्माता !!

(पृष्ठ एक शेषांश)

दुखरन नामें अभिहित ओ सम्बोधित रहला
से दुखरन झा दुखसँ रन ठनने
जोतल-जीवन गाड़ीमे
फँसल पाँकमे जोर लोन घीचि रहल छथि ।
बी० ए० कयलनि पास
बापसँ छुट्टी पोलनि
पेटक खातिर भरक भित्त
सौसे चात नपोलनि
शनिक दशासँ उबरक खातिर सन्त्र जपोलनि
दान-वक्षिणा,
दंडि-धूप ओ घूसघासमे
खर्च करक हित
पन्द्रह कट्ठा खेत खपोलनि
तखन बंचारे विद्यालयमे
'नेशन बिल्डर' पद हाथपोलनि ।
नेतासभक मुँहें सुनलनि जे
"थिकथि राष्ट्र निर्माता शिक्षक
'नेशन बिल्डर'
वन्द्य समाजक,
हिनक वन्दना करक हेतु
वेदो कहैत अछि
हिनक त्यागसँ देशक कायाकल्प भेल अछि ।"
दुखरनजी मुनिने

फुलिकऽ कृपा बनि गेला
धन्य थिका शिक्षक ते
की पुनि बनता चेला ?

शिक्षक शब्दक लिंग ज्ञानपर उठलनि शंका
'ने थिक ई पुल्लिङ्ग न थिक स्त्रीलिङ्गी संज्ञा
भलें कोषमे कोषकार किछु लिखिकऽ राखथु
किन्तु थोक व्यवहार दृष्टियें
नित्य नपुंसक ।'

केवल पुरुषाकार बनल राष्ट्रक निर्माता
आवश्यक तनने छथि आठकमनियों छाताA
विश्वामित्र वशिष्ठक ई उत्तराधिकारी
घोंखि रहल छथि—

'अव्यय शब्दे थिक अविकारी'
ने आदिक उपसर्ग न अन्तक प्रत्यय देखी
नेशन बिल्डर होइतो
गेल घोंसड़ि सभ सेखी
ने होयत किछु आय
न ध्ययकेर रहत बखेड़ा
बनल रहब पीपर-पाकड़िकेर गाछ दुफेंड़ा'
करता कोन उपाय, हाय रे ! पड़लनि डाका
कयलनि बी० ए० पास पबें' छथि सत्तरि टाका
सकल राष्ट्र निर्मातृ-शक्ति चुलहामे पंसल
दुखरन रनमे हारि कन' छथि घरमे बैसल ।

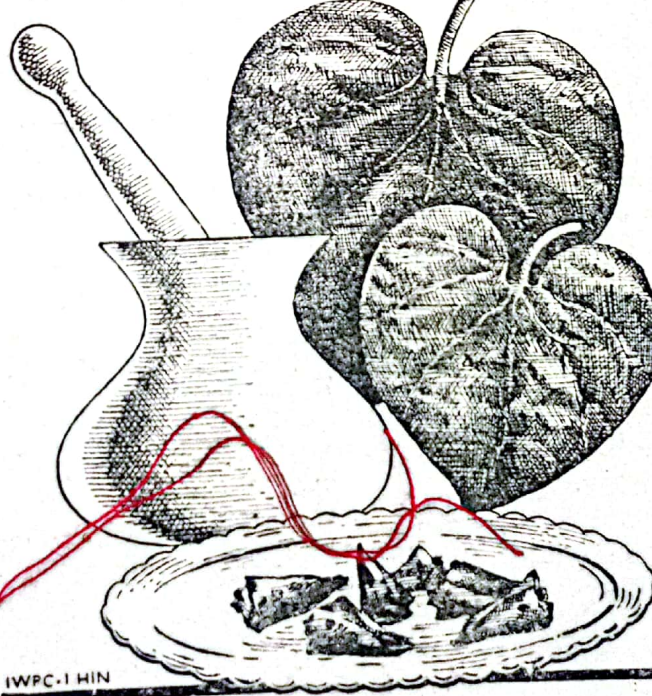
A-विहारमे हाइ स्कूल आठ प्रकारक अछि ।

अखिल भारतीय स्तरपर एक
मैथिली संस्थक संघटन होअय

पटना, ३ जनवरी । स्थानीय
चेतना समितिक तत्वावधानमे आइ
प्रातःकाल प्रोफेसर श्री सुरेश्वर झाक
अध्यक्षतामे एक बैठक भेल । श्री
गोपालजी झा 'गोपेश' मैथिलीक
साहित्यिक प्रगतिक सर्वेक्षण करैत
जनीलनि जे मैथिलीक साहित्यकार-
लोकनिक समक्ष आइ पुस्तक प्रका-
शनक समस्या उपस्थित अछि ।

प्रोफेसर श्री सुरेश्वर झा मैथि-
लीक वर्तमान स्थितिपर प्रकाश दैत
निवेदित कयलनि जे मैथिलीक सर्वा-
ंगीण विकासक लेल निस्सन काज
होयबाक चाही जकरा लेल अखिल
भारतीय स्तरपर एक संस्थाक संघटन
होअय जे भारतक विभिन्न स्थानमे
संघटित मैथिली संस्थामभक काजमे
सामंजस्य आनय । निश्चय कयल गेल
जे एतदर्थ अखिल भारतीय स्तरपर
मैथिलीक कार्यकर्ता, साहित्यकार एवं
प्रेमीलोकनिक अधिवेशन आयोजन
कयल जाय ।

कत्थे की समस्या हल हो गयी



सम्मान के साथ एक बोड़ा पान लाख रुपये के बराबर
है । पर पान कत्थे के बिना निरर्थक है । आये दिन
उत्तम कत्थे का मिलना एक समस्या है । पर इण्डियन
वूड प्रॉडक्ट्स ने इसे आसान बना दिया । यह कत्थे
साने में मजेदार और गुण में सर्वोत्तम है । इससे
१००% कत्था की गारंटी है । बरेली स्थित भार-
की सबसे बड़ी और पुरानी फैक्टरी में आधुनिकत-
म मशीनों और विदेशों में शिक्षा प्राप्त विशेषज्ञों द्वारा
कत्था तैयार किया जाता है । अगर अशुद्धता का क-
संदेह हो तो गिलेण्डर हाउस स्थित हमारे हेड ऑफिस
में तुरंत शिकायत कीजिए ।



इण्डियन
वूड प्रॉडक्ट्स
कं० लि०

इनकी लिखिते :

गिलेण्डर्स अरबथनॉट ऐण्ड कं० लि०

गिलेण्डर हाउस नेताजी सुभाष रोड कलकत्ता

IWPC-I HIN

पूज्य बड़का भाइ (राजपण्डित बलदेव मिश्रजी) क अभिभावकत्वेमे जे-किछु थोड़-बहुत विद्यालाभ कयलहुँ। हमर पिता (स्व. प. मुक्तिनाथ मिश्रजी, प्राचार्य, रमेश्वरलता महा-विद्यालय, राज दरभंगा) जाहि दिन एहि विद्यालयक स्थापना भेलैक, १९०७ ई० क आषाढ़ शुक्ल द्वितीया कऽ, ताही दिन एहिमे व्याकरणक द्वितीय अध्यापकक रूपमे नियुक्त भेलाह। हुनका संग अनेक विद्यार्थी अग्रलिखित, जाहिमे बड़का भाइ सेहो एक छलथिन। ई हमरा परिवारक एक सदस्यक रूपमे रहैत छलाह। हमर पिता अपन पुत्रोसँ अधिक हिनके मानैत छलथिन तँ हमरालोकनिक अभिभावक यह रहलाह।

संसारमे यदि ककरो डर वा धाख सभसँ बेसी होइत छल तँ हिनके। अतः एखनधरि जीवनक जतबा अंश बिता चुकलहुँ अछि, एको क्षण हिनक

राजपण्डित बलदेव मिश्र

राजपण्डित बलदेव मिश्र

— श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' —

अभ्रमण करवाक सुयोग सेहो भेटैत रहल। तँ हिनक संस्मरण रोम-रोममे व्याप्त अछि। सभक वर्णन करऽ लागी तँ एक पैघ संस्मरण ग्रन्थ भऽ जायत।

एहिठाम सभसँ अन्तिम भेटक एक छोट सन घटनाक उल्लेख करब। प्रायः जीवनमे जखन कखनो एको पांती लिखबाक हेतु बैसल होयब, सभसँ पहिने बड़का भाइक चित्र सोझाँमे आबि जाइत छल। होइत छल जे मातृभाषाक प्रति अनन्य अनु-राग आ हमरा प्रति सहज स्नेह रहलाक कारणेँ ओहो एहि पंक्तिकेँ

भेलाक बाद पहुँचलहुँ। जतेक काल हुनका लग बैसल छलहुँ, जो दुग-दुग करैत छल जे लक्षित नै भऽ जाइनि।

लिखबाक आशय ई जे अद्य-पर्यन्त हुनक धाख अन्तरमे ओहिना बनल रहैत छल जेना छात्र-जीवनमे। तँ एहि बेरक एक घटनाक उल्लेख करब।

जखन कन्यादान फिल्मक संवाद-निर्देशकक काज करवाक हेतु हमरासँ आग्रह कयल गेल तँ बम्बई जयबासँ पूर्व साहस बान्हि बड़का भाइक भेट करऽ गेलियनि, किन्तु आने-आन गप्प

हम अपना जीवनमे अद्यपर्यन्त सिनेमा नहि देखलहुँ अछि। राजकुमारक उपनयनबला वृत्तचित्र लेल गेल छलैक सेहो नहि। हमरा एहिसँ घोर घृणा अछि। किन्तु जखन मैथिलीमे सिनेमा बनि रहल अछि तँ से अवश्य देखब।... मातृभाषाक प्रति स्वर्गीय राजपण्डित बलदेव मिश्रक हृदयमे केहन अनुरागक समुद्र तरंगित भऽ रहल छलनि !

अभिभावकत्वसँ फराक नहि रहलहुँ। मैथिल महासभा, मैथिली साहित्य परिषद्, मिथिला पण्डितसभा, कालिदास समारोह समिति आदि अनेक संस्थासँ सम्बद्ध रहलाक कारणेँ भारतक विभिन्न भागमे हिनका संग

अवश्य पड़ताह। अतः कोनो एहन बात नहि हो जाहिमे अपन संस्कृति, सभ्यता वा शिष्टजनसम्मत परम्पराक लेश-मात्रो उल्लंघन भऽ जाय। सम्पूर्ण चरित्र एवं चिन्तन-धाराकेँ विकसित होयबामे प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूपेँ हिनक अंकुश विद्यमान रहैत छल।

मनुष्यकेँ युग एवं परिस्थितिक अनुकूल अपनाकेँ कम वा बेसी बनबऽ पड़िते छैक। अन्यथा जीवन यात्रामे सुविधापूर्वक लक्ष्य-प्राप्तिमे अनेक प्रकारक विघ्नबाधा उपस्थित भऽ जाइत छैक। हम व्यक्तिगत रूपेँ संस्कृतमय वातावरणमे पालित होइतो, संस्कृत भाषाक अध्ययन करितो कर्म-क्षेत्रमे प्रविष्ट भेलापर अंगरेजियाह वातावरण आ साहित्यिक वातावरणमे ओ प्राचीनता नहि निमाहि सकलहुँ जे एक संस्कृत पण्डितक परिवारकेँ चाही।

जाहि दिन पहिले-पहिल केश छँटौलहुँ कि अकस्मात् बड़का भाइक एक आदमी बजाबऽ आयल। बड़ असमंजसमे पड़लहुँ। संयोग छलैक जे जाड़ मास छलैक। नीक जकाँ मफलरक गलीधी बन्हलहुँ आ स्कूल समाप्त

करैत रहि गेलहुँ, सिनेमामे काज करऽ जा रहल छी, से कहबाक साहस नहि भेल। हमरा ई नीक जकाँ बूझल छल जे ई सिनेमाक घोर विरोधी छथि। मनमेन छी-पाँच करैत घूरि अग्रलहुँ। सोचलहुँ, हिनका लग एकर चर्चे के करतनि ?

बम्बई पहुँचलापर जखन तिवारी जी लालकाकाक भूमिका पूर्ण करबामे अपन असमर्थता प्रकट करैत हमरा नामक प्रस्ताव राखि देलथिन आ निर्देशक श्री फणीन्द्र मजुमदार जी हमरा प्रस्तुत होयबाक आदेश देलनि तँ हम आशिख कापि उठलहुँ। सभसँ पहिने मोन पड़लाह बड़का भाइ। पर्दा-पर उतरलाक बाद तँ ई बात नुकायल नहि रहत। तखन जँ बड़का भाइ कहलनि जे अहाँ एहन प्रतिष्ठित वंशमे जन्म लऽ कऽ ई कोन कर्म कयलहुँ तँ की उत्तर देबनि ?

हम किछु क्षण स्तब्ध रहि गेलहुँ। मजुमदारजी हमरा किछु सोचैत देखि पुछलनि—की भावचेन पण्डित जी ! (की सोचैत छी पण्डित जी)। हम उत्तर देलियनि—‘हमरासभक ओहि ठाम एहि वृत्तिकेँ लोक प्रतिष्ठित वृत्ति नहि बुझैत छैक। तकर बाद जे ओ

तर्कसभ देबऽ लगलाह ताहिसेँ हम निरुत्तर भऽ गेलहुँ आ बाध्य भऽ अन्तमे अभिनय करबाक हेतु उद्यत होमऽ पड़ल।

बम्बईसँ जावत घुरलहुँ ताब हमरा विरुद्ध किछ एहन वैधानिक संकटक वायुमण्डल निर्मित भऽ चुकल छल जाहि कारणेँ बड़का भाइकेँ चऽ तु कऽ हमर गतिविधिक पूर्ण जनतब प्राप्त भऽ चुकल छलनि। दरभंगा पहुँचि हम डेराइत-सकपका-इत हुनकर दर्शन करऽ गेलियनि। जाइत देरी कहलनि—आब सभ ठीक भऽ गेल कि नहि ? उत्तर देलियनि—‘ओह, एखनधरि कहाँ ठीक भेल अछि। हमरा आशंका छल जे एकर बाद डेटाह आ भर्त्सना करताह, किन्तु हम आश्चर्यचकित रहि गेलहुँ। बड़का भाइ कहलनि—‘हम अपना जीवनमे अद्यपर्यन्त सिनेमा नहि देखलहुँ अछि। राज कुमारक उपनयनबला वृत्त चित्र लेल गेल छलैक सेहो नहि। हमरा एहिसँ घोर घृणा अछि, किन्तु जखन मैथिलीमे सिनेमा बनि रहल अछि तँ से अवश्य देखब। ई बड़ पंघ काज कयलहुँ अछि। मातृभाषाक एतेक पंघ सेवा करवाक हेतु जे एक टा नोकरीयोपर पड़त तँ अहाँ की बैसल रहब ? पचास टा नोकरी भेटि जायत। मुदा अपना दिससँ अग्रुताइ नहि, देखियौक, की होइत छैक।—सत्य कहैत छी, हमरा रोमांच भऽ गेल। भेल जे मातृभाषाक हेतु हिनका हृदयमे केहन अनुरागक समुद्र तरंगित भऽ रहल छनि। तकर बाद जे हमरामे आन्तरिक बल आयल तकरा हम शब्द-सँ कोना व्यक्त कऽ पायब।

किन्तु, हन्त ! पौष शुक्ल प्रति-पदा रविकऽ क्यो समाद कहलक जे राजपण्डित जी बड़ जोर अस्वस्थ छथि। बेरू पहर दर्शन करऽ गेलियनि तँ पलंगपर बैसल छलाह। पयर झांपल छलनि। पयर उधारिक प्रणाम कयलियनि। ललित जी पुछलथिन—‘चिन्हलियनि ?’ विहुँसि कऽ उत्तर देलथिन—‘हँ, चन्द्रनाथ !’ आह ! की जानऽ गेलहुँ जे ई अन्तिमे बेर हमरा नामक उच्चारण कऽ रहल छथि !

आइ हुनक पाथिव शरीर नहि रहि गेलनि, किन्तु सम्पूर्ण जीवन जे ओ संस्कृत वाङ्मय तथा मैथिली (शेष पृष्ठ २२ पर)



राजपण्डित बलदेव मिश्र

छल हमरा एक मनक पाथर
दुर्भाग्यवश खसि पड़ल बाटपर
भऽ गेल चारि खंड विभाजित
अहाँ माँगिसक' छी एक सेरसँ एक मन
हम कऽ सक' छी अहाँक इच्छाके पूर्ण
कहू ओ पाथरक खण्ड छल कतेक-कतेक

एक, तीन, नौ, सताइ सेर
—श्री मोहन मंडल, चतरिया, दरभंगा
तीन आखरक हमर नाम
अन्त कटय तँ मधु खाइ छी
मध्य कटय तँ मर खाइत छी
आदि कटय तँ धुर बनबैत छी

—मधुर
तीन आखरक हमर नाम
प्रथम कटय तँ मन होइत छी
मध्य कटय तँ जंगल बनैत छी
अन्त कटय तँ फटाका बनैत छी

—वमन
तीन आखरक हमर नाम
आदि कटय तँ वीरक नाम
मध्य कटय तँ शहरक नाम
अन्त कटय तँ पुरान बनय

—पुरान
तीन आखरक हमर नाम
आदि कटय तँ बराबर होइ
मध्य कटय तँ सीम फरय
अन्त कटय तँ धानक सीस

—सीसम
तीन आखरक हमर नाम
प्रथम कटय तँ पारी बनय
मध्य कटय तँ सुरी बनय
अन्त कटय तँ सुपा बनय

—सुपारी
गाछ अछि धरनि सन
पात अछि बिछाओन सन
काँच खायमे पिठार सन
पाकलमे मधुर सन

—केरा
एकटा पटियापर
दू टामे पाहुन
—धरनि
दर्जी न सीबि सकय
धोबी न धो सकय

—केराक पात
तीन आखरक हमर नाम
आखिक शोभा हमर काम
प्रथम कटय तँ रमा बनी
अन्त कट तँ देवता बनी

—सुरमा
देखबामे श्वेत अछि
लाल पानि पिबैत अछि
रानमे रहैत अछि
रान लग गर्बैत अछि

बत्तीस टा पिपरमे
एक टा पात
—दाँत, जी

तीन आखरक हमर नाम
प्रथम कटय तँ रमा बनी
मध्य कटय तँ सीमा बनी
अन्त कटय तँ मस्तक बनी

—सीरमा

—श्री गौरी प्रसाद पूर्वे, द्वारा— श्रीहरी
कृष्ण पूर्वे, ग्राम पो० धकजरी दरभंगा।

खाजा

एकटा गाम छल । गामक नाम
रहैक बाबूपाली । ओहि गाममे एकटा
बुढ़िया रहैत छल । ओकरा चारिटा
बेटा रहैक । चारू बड़ होशियार तथा
चलाक रहैक । एक दिन चारू भाइ
विदा भेल आ गामसँ बाहर चल गेल ।
चारूके भूख लगलैक । ओ सभ
देखलक जे एकटा दोकान छैक । ओ
सभ एकटा मधुरक नाम पूछलकैक
दोकानदार ओहि मधुरक नाम खाजा
कहलकैक । चारू खा कऽ विदा भेल ।
दोकानदार पाइ मडलकैक । किन्तु
चारू कहलकैक जे कोन मधुरक
पाइ ? तो कहलह जे खाजा । हम
खा गेलहुँ । दोकानदार विगड़ल मुदा
चारू भाइ भागिकऽ गाम चल आयल ।

—श्री चण्डेश्वर मिश्र, रायसाहेब
कलकत्ता ।

चुटुक्का

पुत्र (पितासँ) — “बाबूजी टेली-
फोनक तार एतेक ऊँच किएक रहैत
छैक ?”

पिता (पुत्रकेँ) — “जाहिसँ
ओहिमे जे गप्प होइत रहैत छैक से
क्यो नहि सुनि सकय ।”

पुत्र (पितासँ) — “बाबूजी, हम
सभ दिन सपनामे देखैत छी जे हमरा
पयरमे काँट गड़ि गेल अछि ।”

पिता — “सभ दिन जूता पहिरि
कऽ सूतल करू ।

घरेलू अर्थशास्त्र-अपन दरमहा
स्त्रीकेँ नहि कहबाक चाही । किएक
तँ यदि कहबनि जे हमर दरमहा कम
अछि तँ ओ कहतीह—“एतेक पाइ
क्योमे खर्च होइत अछि । यदि बेसी

कहबनि तँ ओ बेसी खर्च करऽ कह-
तीह । यदि कहबनि जे हम किछु नहि
कमाइत छी तखन ओ नीक बेजाय
कहऽ लगतीह ।

एकटा महिला बस कण्डक्टरकेँ
एकटा अठन्नी देलथिन । अठन्नी खराब
रहैक तँ कण्डक्टर ओकरा घुरबैत
बाजल—“देखू, अहाँक अठन्नी खराब
अछि दोसर दियऽ ।”

महिला अठन्नी देखिकऽ बजलीह—
“हमरा बकलेल नहि बूझ । एहिपर
१९४६क मोहर छैक, यदि ई खराब
रहितैक तँ क्यो एकरा १८ सालमे
नहि पकड़ि लिताँक ?

—श्री उमेश मिश्र, द्वारा—प्रोफेसर श्री
शचीनाथ मिश्र, कादिराबाद, दरभंगा

अभिलाषा ० ० ०

(पृष्ठ २०क शेषांक)

छैक । खाली एकटा नीक दिन निश्चित
करू ।

रे०—बेस, नीलू बाबू, एकटा
वात हमरो मानल जाय ।

नी०—जे जे आज्ञा ।

(सोनक प्रवेश)

रे०—कतऽ छलीह हे सोन !
देखैत छह तोहरभायक विवाह हम
ठीक कऽ रहल छियह ।

सोन०—दादा, नीलू भाइक
विवाह तँ हम ठीक कयलियनि अछि ।

रे०—कतऽ हे सोन ! कन्या केहन
छैक ?

सोन०—बी०ए०मे पढ़ैत छैक दादा
मंगरौनी गामक छैक ।

रे०—गाम-ठाम तँ बड़ बढ़िया ।

सोन—मुदा दादा, कनियाक बाप
तिलक नहि दऽ सकतनि । गरीब
लोक छैक ।

(नीलू दिस ताकि) की ओ'
नीलू ! अहाँ तँ कहने रही जे तिलक
नहि लेबैक बियाहमे ।

नी०—जे अहाँलोकनिक विचार ।
मुदा एक बात । बियाह होयतैक
ट्रेनिंग समाप्त भेलाक बादे ।

सोन०—हँ, हँ । सँह तँ हमहुँ कह-
लिएक अछि कनियाक बापके । तखन
हम लिखि दैत छियनि अहाँक माँकेँ ।

नी०—बेस लिखि दियौन ।

रे०—वास्तवमे वर्तमान पीढ़ीक
लोक महान अछि । तिलकक बीमारी
हटयवा लेल जान-गमौने अछि ।
नीलू बाबू ! अहाँलोकनि सन पँध
विचारवान लोकक आवश्यकता एहि

समाजकेँ छैक जे समाजक दुर्गुणकेँ
दूर कऽ सकत । संग-संग बन्धुत्व आ
एकताक सम्बन्ध स्थापित कऽ सकत !
नीलू बाबू । एही तरहक विचार
एवँ एकतासँ समाजक आर देशक
कल्याण भऽ सकैत अछि ।

नी०—दादा, सोनक विवाह
जल्दीये भऽ जयबाक चाही । हमरो
ट्रेनिंग करऽ लेल मद्रास जयबाक अछि ।
रे०—नीलू बाबू, तखन हम ओरि-
याओन करऽ लेल जाइत छी । (जाइत
छथि) ।

छठम दृश्य

(स्टेशनपर सभ क्यो नीलूकेँ
विदा करैत छथि । रेवती, सोन आ
सोनक माय)

रेवती—अहाँ दीर्घायु होइ आ देश
समाजक कल्याण कयल करी से हमर
शुभकामना । अहाँ सन पँध विचार-
वान लोक देशक रक्षा करय नीक
बात । पुनः आशीर्वाद दैत छी ।

नी०—गोड़ लगैत छी, दादा !
माँ !

नीलूक माँ—बेटा भगवती आइ
हमरसभक अभिलाषा पूर कयलनि ।

नी०—माँ, सोन हमर बहिन छथि ।
हिनकेँ कृपासँ हम पढ़ि-लिख सकलहुँ ।
सोन हमरा जीवनकेँ प्रेरणा दैत
रहलीह अछि । (सोन दिस तर्कैत),
सोन, एम्हर सुनू । हमरा माँकेँ गाम
पहुँचवा देबनि ।

सोन०—बेस, नीलू भाइ ।

नीलूक माँ—बेटा, अहाँ युग-युग
जीवी । भगवती ! एहिना सभक
अभिलाषा पूर करियौक ।

सोन०—गोड़ लगैत छी, नीलू,
भाइ । चिट्ठी देब ।

(विदा होइत छथि)

समाप्त

राजपण्डित ० ० ०

(पृष्ठ ८क शेषांश)

भाषाक अभ्युन्नतिक हेतु सिंह गर्जना
करैत रहलाह से ध्वनि एखनो कानमे
ओहिना अनुगुंजित भऽ रहल अछि,
होइत रहत । यदि शास्त्र पुराण सत्य
थिक तँ ओहि पुण्यात्माक यशःशरीर
युगयुगान्तधरि माँ मैथिलीक चरण-
सेवकक हेतु पथ प्रदर्शकक काज करैत
रहतनि । हमर ई अश्रुपूर्ण श्रद्धा ओहि
दिवंगत आत्माक प्रति निवेदित अछि ।

मिश्रटोला, दरभंगा ।

चाड़-चांस

श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'

(प्रथम दृश्य)

सन्ध्या प्रातः काल, स्थान-शयन-
कक्ष, देवालपर अयना, स्नो, पाउडर,
सेफ्टीरेजर, तेल आदि एक टेबुलपर
राखल, कातमे एकरै ऊपर पोथी आदि।
बिजलीकान्त तौनी ओढ़ि सुतल
छथि। नेपथ्यमें ध्वनि अबैत छैक-
बौआ कहैत छलाह जे रिजल्ट बह-
रायतसे मधुबनी जायब। आब अबेर
होइत छनि, क्यो उठा दहुन। बौआ,
औ बौआ। बिजली! बिजलीकान्त!
उठू, उठू।

बिजलीकान्त घड़फड़ाक
आँखि मिड़ैत उठैत छथि आ जल्दी-
जल्दी दाढ़ी बनवऽ लगैत छथि। फेर
स्नो लगबैत छथि, केश थकड़ैत
छथि, सूट पहिरैत छथि, आ प्रत्येक
बेर अयनामे मुँह देखैत छथि। बापक
प्रवेश)

बाप-बौआ। तैयार भऽ गेलहुँ ?
वि०-हँ।

बा०-आइ कोन दिन थिकै ?
वि०-शुक्र।

बा०-रविकऽ पान, सोमकऽ दर्पन,
मंगलकऽ किछु धनियाँ चर्वन, बुधकऽ
गड़, वृहस्पति राइ, शुक कह्य जे दही
सोहाइ। हँ यात्रा ले' आइ दही
चाही। रौ ठिठरा। ठिठराऽऽऽ।

(नेपथ्यमें ध्वनि)-यैह अयलहुँ
मालिक।

ठिठरा-(प्रवेशकऽ) बिजली बौआ
पनपिआइ करधिन से कने पानि लावऽ
गेल छलैक।

बा०-आइ नमे पुछहुन जे दही
छनि कि नहि? (कनेक सोचि) ओह,
दही कतऽसँ औतनि? जो दिलचन
साहुक दोकानसँ पाव भरि दही आनि
दहुन।

ठिठरा-मालिक, दिलचन साहुक
ओइ ठिन तँ गोपाल दही रहै छै,
सजबी दही कहाँ पाइ।

बा०-हँ रौ से तँ ठीक कहै छै,
अच्छा जो, विधि पुरावऽ लें एक
पाइक आनि दहुन।

ठिठरा-मालिक, एक पाइक
दही मझवै तँ दिलचनमा पाइ लऽ

लेत आ कपारपर दहीक ठोप कऽ
विदा कऽ देत।

बा०-अच्छा जो, दू पाइक लऽ
लिहें।

(ठिठरा जाइत अछि)

बिजली-बाबू! रिजल्ट किनव
से दस टा रुपैया दियऽ ने।

(बाप टाका लावऽ आइत
जाइत छथि।)

भाइ भरल हमर लोटा

श्री शामलाल

मधु भावक पत्नी अछि धोअल
मरिच ज्ञानकेर फँटल अछि
भक्तिक दूध, सोंफ आशाकेर
श्रद्धा मिसरी घोरल अछि
ललित कल्पनाकेर अछि कुंडी
प्रेमक अछि निर्मल सोंटा
बड़ा यत्नसँ बनल आइ अछि
भाइ। भरल हमर लोटा।
उत्सर्ग करी शिवकेँ पहिने
तँखन सभ क्यो मिलिऽ पंथब
गरल-तापसँ मुक्ति पावि
क्षण भरि एहि जगतमे जीयब
अछि ई न नवावक मधु प्याला
अछि ई तँ विलासक मकरध्वज
कर्म-यज्ञ केर आहुति-घृत, शिव
भाइ। भरल हमर लोटा
पहिने तँ हम पीबैत छलहुँ
कहियो कदाच एकहि संध्या
अमर मधुप केर संग भेल
तहियासँ चलल दुनू संध्या
सम्प्रति मन जे सदिलखन पीबी
जँ क्यो देअय भाइक गोला
ई राति देखावय दिवसेमे ई
भाइ भरल हमर लोटा

बिजली-पाँच रुपैया तँ हलुअ-
इयाक बाँकीये छैक। ओ तँ रच्छ अछि
जे बाबूसँ टर्मिनलक फीस तीस रुपैया,
इम्तिहानक फीस पैंतालिस रुपैया,
फेर परीक्षाक फीस साठ रुपैया
आ एक्जामिनेशन फीस एक सय
सोज कऽ लैत रहलियनि, ने तँ घुरि-
कऽ मधुबनी गेनाइ मोसकिल होइत।

(बाप अबैत छथिन आ एकटा

पुरान लत्तामे बान्हल गेठरीकेँ फोलि
कऽ कागतेमे लेपटाओल नोटकेँ उधा-
रैत बाहर करैत छथिन आ एकटा
दसटकिया दऽ कहैत छथिन)

बाप-बौआ! जाउ, भरि पेट
पनपियाइकऽ लियऽ, रुपैया सरियाकऽ
राखि लियऽ आ साइकिलसँ चल
जाउ।

(बिजली कान्त जाइत छथि।)

बाप-हे सत्यनारायण भगवान!
जँ बौआ पास करता तँ सुनता पूजा
करब।

(पर्दा खसैत अछि)

(दृश्य दोसर)

(स्थान गामक बाट, मधुकान्त

स्नानमे अबेर देखैत छी ?

मधु०-हँ, आइ बौआक रिजल्ट
बहरयतनि। फैनलमे तँ नम्बर नौक
छलनि, मुदा एकटा डकूवा मास्टर
वाइलोजीमे नम्बर काटि लेलकनि से
कनिये लेल चुकि गेलाह। हमर
बौआ तँ चन्सगरमे फस्ट नम्बर
छथि। ई पास कऽ लेता तँ डाकदरी
पढ़ऽ लेल मीडीकलमे नाँ लिखौता।
निरसू-डाकदरी पढ़ता ?

मधु०-हँ हँ तँ वाइलोजी
रखने छथि। डाकदरीमे सभसँ पहिने
वाइ बिगड़केँ दवाइ सिखवै छै,
तँ इन्टरेन्सेसँ वाइक पढ़ाइ शुरू भऽ
जाइ छै। इन्टरेन्सोमे बौआकेँ वाइ-
लोजियमे फेल कऽ देने रहनि तँ
सफलीमन्ट्रीमे पास कयलनि आ
कालेजोमे सँह भऽ गेलनि। आइ
सफलीमन्ट्रीएक रिजल्ट बहरयतै।

निरसू-आइ-काल्ह कलहा
चीज खाइत-खाइत बहुत लोकक
वाइ बिगड़लो रहैत छैक। हमरा
अपनो पेट गुम्म कयने रहैत अछि
आ आइ नमे तँ बुझू पेट फूलिकऽ
डम्फा भेल रहै छनि।

मधु०-सड़िता, आबऽ दियोक
फगुआ, तँ दुनू गोटे ओही डम्फापर
खूब फगुआ गायब।

निरसू-हँ औ सड़िता! बेटा
डाकदरी पढ़ैत छथि तँ किएक ने
फगुआ सूझत? हम सभ तँ मलार
गाबि रहल छी।

मधु०-से किएक ?

निरसू-मर तँ देखै नहि छी,
छिट्टा-खुरपी? एकटा चरवाह जे
ताकब से नहि भेटत। हटोलहुँ गाय-
महीँस, मुदा विनु बड़दे तँ निर्वाहि
नहि। जाइ छी ओही दुनू महादेवक
लेल किछु घास-पातक जोगाड़मे।
अहुँकेँ अबेर भेल, जाउ डूब दियऽ
गऽ।

मधु०-तँ, भगवान सेहो सम्पुटमे
लहालो होइत होयताह।

(जाइत छथि)

निरसू-बेटा वाइलोजी पढ़ै
छथिन तकर अपना तँ एतेक गुमान
छनि, आ बेटाकेँ वाइलोजीमे वाइ-
डील भऽ रहल छनि। डाकदरी सुसके
होइत तँ ढोडाइ-मझनसभ डाकदरे
भऽ जाइत। किदर, कहलकै जे चरऽ
गेला तँ चौथो न अयला।

(जाइत छथि)

निरसू-की औ सड़िता! आइ

(तेसर दृश्य)

(स्थान-मधुकान्त रायक दलान । एकटा चौकी, ताहिपर मल-पुरान दरी ओछाओल । अडभोछासँ गोठ बन्हने बैसल मधुकान्त राय तमाकू चुना रहल छथि । तन्दा होइत छनि, पहिने एक-आध बेर झुकैत छथि पुनः सम्हरिकऽ तमाकूकेँ तरहथी सँ मलिकऽ दहिना हाथपर कऽ ओलै छथि आ वामा तरहथीकेँ जोरसँ नाकमे रगड़ि लैत छथि । सुरसुरी लगलाक कारण गड़गड़ा उठैत छथि तावत छिक्काक से भावना बृद्धि पड़ैत छनि । किछुकाल छिक्काक मुख-मुद्रा बनबैत छथि तावत साइकिलक घंटी सुनि पड़ैत छनि तँ आँखि निडारैत छथि कि तड़ाक-तड़ाक छिक्का दू बेर भऽ जाइत छनि । तावत बिजलीकान्त वामा हाथक एकवारकेँ मसोड़ने प्रवेश करैत छथि ।)

मधु०—(देखते देरी प्रफुल्लित मुख-मुद्रा बनबैत) की बौआ ! आबि गेलहुँ ? रिजल्ट की भेल ?

बिजली—भऽ गेलै वाइचान्स । अपना तँ एहन अन्दाज नहि छल । (विधुआयल मुहें जाइत छथि)

मधु०—हाय रे सत्यनारायण भगवान ! हुनकर महिमा अपरम्पार छनि । आब कोनो परवाहिने, फैनलमे बौआ पास नहि भेलाह से नीके भेलनि । ओ तँ भगवानक चक्र थिकनि, छुच्छे पास तँ सभ होइत अछि आ बौआक भागमे तँ वाइचान्स लिखल छलनि । (हाक दैत) रौ ठिठरा ! कने सडि.ताकेँ बजौने अबहुन । दौड़िकऽ जो, बौआकेँ वाइचान्स भेलनिहेँ ।

(ठिठरा अबैत अछि आ जाय लगैत अछि । तावत माथपर भरि छिट्टा घास लेने निरसूक प्रवेश)

ठिठरा—हे लियऽ गिरहत ऊ मालिक तँ अपने चल एला ।

मधु०—आबह सडि.ता, हम तोरे बजबऽ लेल ठिठराकेँ पठबैत छलि-एक । बौआ रिजल्ट तँ लऽ कऽ ग्रय-लाह, हुनका वाइचान्स भेलनिहेँ । आब तो सभ आशीर्वाद दहुन जे डाकदरी पार लागि जाइनि, तखन होइत रहथु रोग-व्याधि भरिगौआकेँ आ कि नहि ?

ठिठरा—गिरहत, बौआ डाकदर भऽ जेथिन तखन भरिगाममे मरकी ठुकि ने जाइक लगय मोछ परोसहि छूरा बौएसँ दवाइ सभ लेतनि ।

मधु०—तो जल्दी-जल्दी थडिसँ खरिहानधरि आ कोनटासँ दलानधरि सौसे खड़िले ।

निरसू—की कोनो भोज भात करबह ?

मधु०—सत्यनारायण भगवानकेँ सुनता पूजा कबुला कयने छलियनि । तँ तँ तोरा तकैत छलियह । कोना की होयतैक ?

निरसू०—हेतै की ? एक मोन दूध मड्डा लैह, दस सेर चिन्नी, दू घोंड़ केरा, एक सेर किसमिस, दू सेर छोहारा । चारि सेर नारिकेर, पाव भरि दछिनी, एक बोतल गुलाबजल । एहीसँ मोहन-भोग भऽ जयतह आ सुक्खा परसाद आधमोन गृहमेकेँ पीसिकऽ पाँच सेर घिउ आ दस सेर चिन्नी मिला दहक । दू डोली पान, आध सेर सुपारी, एक कनमा लौंछ एक डिब्बा जर्दा आधपा खयर, पावभरि कोनो अन्नकेर एक वरुकी चून मड्डा लै । पान परसाद लऽ कऽ पूजा कऽ लैह ।

मधु०—आन चीज तँ सस्त की महग, बजारमे भेटितो छैक, जे ई चिन्नी कतऽ आनव ?

निरसू—लाबह टाका, हम आनि दैत छियऽ । दू रुपैया सेर जते लेबह तते हम गामक मुखियेक ओहिठामसँ उपपर कऽ देबह । हँ, एकटा चीज आरौ, भगवान लेल पाँच हाथ वस्त्र चाहियऽ आ एहन खुशीक दिनमे तँ उचित थिकह जे नहि बेसी तँ एको खण्ड धोती आ एकटा अड.पोछा अपनो लेल आ पुरोहितोकेँ लेल अवश्य सँ अवस्से लैह ।

मधु०—तो तँ तेहन विस्तारय तारय कयने चल जाइ छह जे...

निरसू—आहिरेवा, एहन भागो तँ तोरे भेलह अछि जे बेटाकेँ वाइ-चान्स भेलह अछि । एहि परोपट्टामे तँ कयो डाकदरी पढ़नहुँ ने छथि ।

मधु०—कनेक बजारक काज कऽ दितह तँ बड़ गुन मानितियऽ सडि.ता ।

निरसू—बजारक काज कहह तँ एहीठाम एखने बजारि दियह ।

मधु०—अच्छा से तँ बजारक जखन दिन औतैक, आवऽ दहक जूझीतल तखन फड़िछा लिहऽ, एखन कीनऽ बेसाहऽ लेल कने महति करह । हम अपने गोअरटोली दिस दूधक जोगाड़मे जाइ छी आ ठिठराकेँ कने पठबैत छिएक ओझाकेँ बजा अनतनि ।

निरसू—हँ हँ अवश्य, भला कह एहन सुदिनमे ओझाकेँ खबरि कोना ने देबहुन । अच्छा, हम खा-पीकऽ चल अबैत छी, तो रुपैया ओरियौने रहह ।

(जाइत छथि)

मधु०—ठिठरा, रौ ठिठरा ।

(ठिठराक प्रवेश)

मधु०—खड़ल भेलोक ?

ठिठरा—कोनटा खाली बाँकी छैक ?

मधु०—दूर लड.टा जल्दी कर,

लपकिकऽ चल जो उतरवारि गाम ओझाकेँ कहिहौनि जे भगवानक पूजा थिकनि से अवश्यसँ अवश्य भरियो रातुक खातिर आबधि, हम गोअर-टोली जाइत छी । सडि.ताकेँ ओम्हरे रुपैया दऽ देबनि ।

ठिठरा—बेस गिरहत ।

(ठिठरा एक दिस आ मधुकान्त राय दोसर दिस चल जाइत छथि)

(चारिम दृश्य)

(स्थान-मधुकान्त रायक

आडन । पूजाक सभ ओरियान । छोटकी चौकीपर माँजल लोटा ताहिपर सराइ, ताहिपर एकटा पोयर अंगपोछा, फूल आदि । चढ़ल, कोहामे मोहन-भोग, एक कोहामे पान आ एक कोहामे सुक्खा प्रसाद राखल छनि । मधुकान्त राय आ पुरोहित निरसू पोयर धोती आ ललका अंग-पोछा पहिरने ओढ़ने छथि । नेपथ्यक भीतरसँ घंटी घंटा शंख ध्वनि सुनि पड़ैत छैक । परदा उठैत अछि । सुनि पड़ैत छैक एतावद्द्रव्य मृत्युक हिरण्यमग्नि देवतं यथा नाम गौत्राय ब्राह्मणाय दक्षिणामहं ददे । एक व्यक्ति आरती लऽ कऽ हुँकार पुरनिहार सभकेँ देखा रहल छनि)

निरसू—(दक्षिणा लैत प्रसन्न मुद्रासँ) बोल श्री सत्यनारायण भगवान की जय । होअह सडि.ता, आब पान प्रसाद बाँटह ।

ओझा—पान प्रसाद बँटवासँ पहिने कनेक बिजली बाबूकेँ सभसँ आशीर्वाद लऽ लेबऽ कहल जाइनि ।

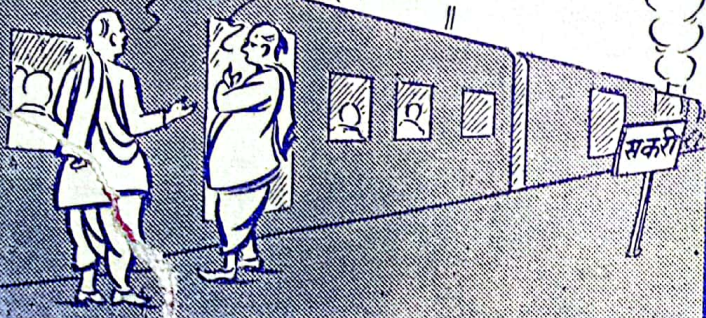
पानक वारिक—(दर्शकसँ) अगु-तायब नहि क्यो । पान प्रसाद लऽ लेब तखन जाइत जायब ।

(मधुकान्त राय मोहन-भोग

(शेष पृष्ठ २२ पर)

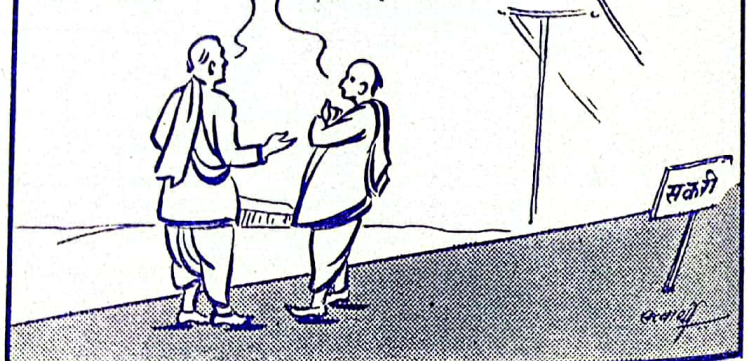
पहिने समधि अपने !

नहि, समधि पहिने अपने !



पहिने अपने...

नहि, पहिने अपने...



वसन्तागमन

बितल राति
जगि गेल भोक्कवा
बहि रहल वासतो बसात
सुमधुर सुगन्धक संग ।
लगक कलमबागमे
कोइलिक जोड़ा अछि बाजि रहल
स्वर टकराइछ कानसँ—
सखि वसन्त आवि गेल !

—श्री सुकान्त,
द्वारा—श्री नागार्जुन
महेन्द्र, पटना-६

रमाक घरारी

(पृष्ठ १२क शेषांश)

हरामीसभ ! रामा अपन जिनगीक
अन्त अपने घरारीपर करत । टीनक
फुसियाही छत ओकरा नहि चाहिएक ।
रामा कोदारि चलबस जनैत अछि आ
ओ घरतीक टुकड़ाक भूखल अछि ।
जखन घरतीक टुकड़ा नहि भेटलैक,
सोराजीसभ धोखा देलकैक तँ भीखक
टुकड़ा रामा नहि लेत ! ... नहिलेत
ओ भीखक टुकड़ा ! ... —आ क्षण
भरिमे ओ सावा-सय वर्षक बुढ़वा-
जुआन जेना जर्जर भऽ गेल । बिल्कुल
बुढ़-धुत्थर ! ! ... ओ कापऽ लागल
आ खसि पड़ल । ... ओकर प्रजा हाहा-
कार करऽ लगलैक । ... रामाकेँ
उठाकऽ घर लऽ जाइत गेलैक ।

भरि राति रामा बुढ़वाइत
रहल—“हमर घरारी ! हमर
घरारी ! !” आ जखन दोसर दिन
टोन्बला निसपीटर’ टीनक छतबला
क लऽकऽ गाम आयल तँ ओ सुनलक
काल्हिबला बुढ़वा अपन घरारीक
गटिकेँ करेजसँ सटौने मरि गेल ।

भारतमे

(पृष्ठ १६क शेषांश)

भायकेँ अलग-अलग स्त्री रहलासँ
परिवारमे भिन्न होयब आवश्यक भऽ
जाइत छैक । कारण, स्त्रीक आपसक
झगड़ासँ परिवारक विभाजन भऽ
सकैत अछि, तेँ परिवारक एकता
रखबाक हेतु बहुपति प्रथा नीक ।

उपरोक्त जे किछु कारण नृतत्व-
वैज्ञानिकलोकनि बहुपति प्रथाक
विषयमे कहैत छथि, खूब युक्तिसंगत
नहि बुझना जाइछ, कारण, यैह
एक टा कारण नहि भऽ सकैछ ।
वस्तुतः कोनो प्रथाक कारण कोनो
विषय-विशेषसँ जोड़ब उचित नहि ।
प्रथाक सम्बन्ध तत्कालीन समाजक
संस्कृति एवं परम्परासँ रहैत अछि जे
वंशानुक्रम द्वारा अनुकरण कयल जाइत
अछि आ अन्तमे समाजक दृढ़ नियम
भऽ जाइछ ।

एन्थ्रोपलोजिकल सर्वे आफ इण्डिया,
भारत सरकार, नो. बी.-२०, नागपुर

वाइ चान्स

(नृष्ठ ८ क शेषांश)

आ निरसू सुक्खा प्रसादक कोहा
उठबैत छथि ।)

मधु०—रौ ठिठरा ! बौआ
कतऽ कोनमे नुकायल छथि । कनेक सोर
करहुन ।

(नेपथ्य दिस मुँह कऽ प्रतीक्षा
करैत छथिन । बिजलीकान्त मुँह
बिधुओने अबैत छथि, आँखि मिड़ि
रहल छथि ।)

फागु

श्री मतीकालिन्दी देवी

होरी बुन्दावनमे खेलय नन्द कुमार ।
छोनि-छोनि दधि माखन खायल तोड़ल गज मोतिहार ।
अबीर गुलाल चलय पिचकारी लागय गगन अन्हार ।
श्याम सुन्दर मुख मुरलि विराजय गोपी सभ करताल ।
कालिन्दी मन हरखय गावय नैया लगाविय पार ॥

सरिसव, दरभंगा

ओझा—की ओ, एना मुँह किएक
बिधुओने छी ? अहीकेँ लऽ कऽ ई
उधब-बाधब आ अहीँ मुँह नुकौने
छी से किएक ?

बिजली—ओझा ओ ! हमरा तँ
वाइचान्स—

ओझा—वाइचान्स की ? क्रौस
लागि गेल ?

बिजली—हूँ, रिजल्टमे हमर नाम
नहि अछि ।

ओझा—तखन ई धूम धड़ाका
कथीक ?

बिजली—से तँ बाबू जानथि ?

मधु०—की होइत छनि ओझा ?

ओझा—ई तँ वाइचान्स फेल
भऽ गेलथिन ।

मधु०—फेल ? (हाथसँ कोहा
खसि पड़ैत छनि, मोहन भोग हेरा
जाइत छनि, बैसल धिया-पुता हाँइ-
हाँइ समटि कऽ सुरकऽ लगैत अछि ।)

निरसू—(सुक्खा प्रसादक एक
डबल फक्का फाँकि लैत छथि । पानक-
वारीक पाँच सात खीली पान लऽ कऽ
मुँहमे दऽ सरियबैत अछि) पानक
वारीक—बोल दे श्री सत्यनारायण
भगवान की जय ।

निरसू—जय (सुक्खा प्रसाद
मुँहसँ उड़ैत छनि पानवला हवर-
हवर पान चिबबैत अछि, धिया पुता
हाथ उनटाकऽ चटैत अछि ।)

एकटा छोड़ा—ई तँ वाइचान्स
थोड़ेक हाथ लागि गेल ।
(परदा खसैत अछि)

मिश्रटोला, दरभंगा ।



मानवक सहजात प्रवृत्ति ने सद्गुण दिस रहैत छैक, ने दुर्गुण दिस। ओकरा हृदयमे एक मात्र औत्सुक्य रहैत छैक अवश्ये, जाहि औत्सुक्यक निवारणार्थ जे कोनो नवीन वस्तु ओ देखैत अछि तकर रहस्य बुझबाक जिज्ञासा ओकरा अन्तरमे उत्पन्न होइत छैक। तात्पर्य ई जे जाहि प्रकारक परिवेशमे रहि ओ प्रकृति, समाज एवं परिवारसँ परिचय प्राप्त करैत अछि, ओहने जिज्ञासा ओकरा हृदयमे उत्पन्न होइत छैक आ जाहि रूपेँ ओहि जिज्ञासाक पूर्ति होइत छैक तेहने प्रवृत्तिक विकासो होइत छैक। ओही ठामसँ निर्विशेषण गुण सत् अथवा दुर्दृष्टि विशेषणसँ युक्त होमऽ लगैत अछि।

अतः संसारक शिक्षाशास्त्री अथवा बालमनोविज्ञानविशेषज्ञ मानव शिशुक समुचित विकासक हेतु वातावरणकेँ सभसँ महत्त्वपूर्ण स्थान दैत छथिन। प्रायः एही मनोवैज्ञानिक तथ्यकेँ दृष्टिमे राखि प्राचीन युगमे ऋषि-मुनिलोकनि गुरुकुलक व्यवस्था कयने रहैत छलाह, जतऽ मानव-जीवनक जे मुख्य उद्देश्य श्रेय प्राप्त, तदनुकूल वातावरणक सृष्टि कयल रहैत छलैक। तेँ स्वभावतः ओकरामे सद्गुणकेँ प्रति जिज्ञासा भाव उत्पन्न होइत छलैक आ ओहि जिज्ञासाक पूर्ति कयनिहार विचक्षण आत्म तत्त्व-दर्शी विचक्षण विद्वानलोकनि रहैत छलथिन।

सद्गुणकेँ विकाससँ विवेकक जन्म होइत छैक। विवेककेँ पुस्तकीय ज्ञानसँ नहि, अपितु सद्विचारसँ सम्बन्ध छैक आ सद्विचार उत्पन्न होइत छैक शिव संकल्पसँ। आहार निद्रा भय मैथुन आदि पांच भौतिक तत्त्वसँ प्रादुर्भूत प्राणिमात्रमे समाने रूपेँ विद्यमान रहैत छैक, किन्तु प्राणिमात्रमे सर्वश्रेष्ठ होयबाक कारणेँ मनुष्यकेँ प्राकृतिक दौर्बल्यपर विजय

तन्मेमनःशिवसंकल्पमस्तु

श्रीचन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'

प्राप्त कऽ एक एहन अलौकिक गुणक विकास दिस अग्रसर होमऽ पड़ैत छैक जे ओकरा 'स्व'क परिधिसँ बाहर कऽ समस्त मानव जाति अथवा अखिल जीव लोकक कल्याणार्थ नियोजित कऽ सकैक। तखने ओ अपन मानव-जीवनकेँ सार्यक कऽ सकैत अछि। निष्कर्ष ई बहराईत अछि जे हृदयमे शिव संकल्प हो ताहिसँ सद्बिचार उत्पन्न होयत, सद्बिचारसँ विवेक आ विवेक द्वारा श्रेय प्राप्ति भऽ सकैछ। तेँ वेदमे कहल गेल अछि 'तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु।'

ओ संगहि सिरजंत छथि सबहिक श्रीभगवान' यद्यपि एहि भौतिकतो प्रधान युगमे विवेकी मनुष्यक प्रति आदर ओ श्रद्धा समाजमे विद्यमान छैके। कोनो चरित्रवान व्यक्ति एखनो समाजमे छथि, जे भौतिक दृष्टिये साधनहीन छथि, निर्धनतामे अपन जीवन-यापन करैत छथि, जे सामाजिक प्रतिष्ठा नहि प्राप्त कऽ पवैत छथि, जनिका बाह्य चाकचक्यसँ नितान्त दूरे रहऽ पड़ैत छनि, किन्तु से सभ होइतो भले वातानुकूलित भवनमे

अनुशासन एक क्रम थिक, एक पद्धति थिक, जकर क्रमिक विकासमे स्वतः सौन्दर्य उद्भूत होइत छैक। अर्थात् अनुशासन मानसिक स्वस्थता थिक, जकर लाभसँ हम अपनाकेँ समाजक समक्ष आदर्श व्यक्तिक रूपमे उपस्थित कऽ सकैत छी। किन्तु से शिव संकल्पसँ संभावित भऽ सकैछ।

विद्याक सम्बन्धमे भारतीय मान्यता रहल अछि 'सा विद्या य' विमुक्तये' अर्थात् अहंकारक क्षुद्र परिधिसँ प्राकृतिक सहजात दुर्बलतासँ, संसर्गजन्य दोषसँ, स्वार्थक संकीर्णतासँ, मोहजन्य अज्ञानसँ मुक्तिए विद्या-प्राप्तिक मूल उद्देश्य रहल अछि।

दोसर ठाम कहल अछि 'विद्यया-ऽमृतमश्नुते' विद्या द्वारा अमृतत्व व्याप्त होइत छैक, आ अमृतत्व विनु 'स्व'क परिधिसँ बाहर भेले, विनु अहंकारसँ मुक्त भेले भँये ने सकैत छैक। जाहि ठाम विद्या प्राप्तिक एहन महान उद्देश्य छल ताहि ठाम वर्तमान युगमे विद्याप्राप्तिक उद्देश्य की रहि गेल अछि से अवश्य चिन्तनीय।

महाकवि श्री सीताराम झा एक ठाम लिखैत छथि—

पेट भरक टा हेतु क्यो पढ़ि जनु होथि हरान

रहैत होथि, चेभरलेट कारपर चलैत होथि, रत्न-जटित अड़ुठी पहिरैत होथि, रेशमी वस्त्रसँ आच्छादित रहैत होथि, लाख टाका बैंक बैलेन्स रखैत होथि, किन्तु ओहि निर्धन व्यक्तिक चारित्रिक बलक सोझामे, नहि प्रकट रूपमे, भीतरो-भीतर अपनाकेँ हीन मानिते छथि। किन्तु खेद जे तथापि ओहि गुणक आश्रयण कऽ अपनाकेँ अथवा अपन उत्तराधिकारीमे ओहि सद्बिचारक ओहि सद्गुणक विकास करवाक ओ करयबाक दिशामे डेग उठयबासँ अपनाकेँ अक्षम, असमर्थ पवैत छथि। तकर मूल कारण थिक हृदयमे शिव संकल्पक अभाव।

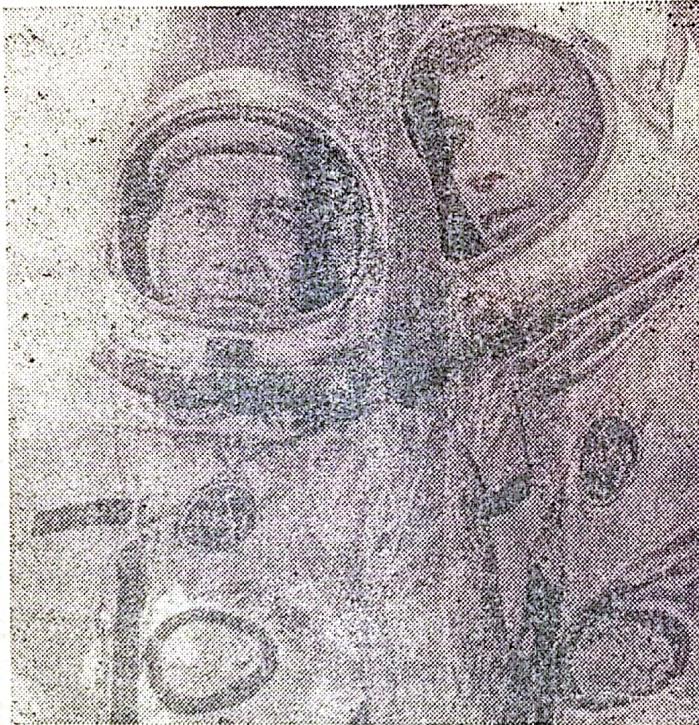
आइ चारू भागसँ ध्वनि आबि रहल अछि जे जाहि विद्यार्थिवर्गपर देशक भविष्य निर्भर अछि, ताहि वर्गमे अनुशासन पालन करवाक स्थानपर

अनुशासनक उल्लंघन करवाक प्रवृत्ति क द्रुत गतिसँ विकास भऽ रहल अछि। एहि हेतु समाजक नेतृत्व कयनिहार देशक कर्णधारलोकनि सार्वजनिक मंचसँ घोर चिन्ता व्यक्त करैत छथि आ एकर निराकरणक हेतु रंग-विरंगक आयोग समिति आदि संघटित होइत अछि, गोष्ठी आयोजित होइत अछि आ समस्त दोषारोपण कयल जाइत अछि वर्तमान शिक्षापद्धतिपर आ शिक्षक समुदायक योग्यतापर। किन्तु एतवा सोचबाक पलखति ककरो नहि जे अनुशासन शब्दक अर्थ की? पहिने शासन तखन ओहिमे अनुपसर्गक योगसँ अनुशासन शब्द निष्पन्न होइत अछि। अतः अपेक्षित ई अछि जे जाहि पवित्र आचरणक, जाहि उत्तरदायिताक, जाहि चारित्रिक उत्कर्षक, जाहि अनुशासनशीलताक

आशा अपन प्रभविष्णु छात्रलोकनिसँ हमरालोकनि रखैत छी, की आजुक समाजक निर्माता कहौनिहार, राष्ट्रिय यन्त्रक संचालन कयनिहार तथा अपनाकेँ अभिभावक कहनिहार लोक ओहि प्रकारक राष्ट्रिय, सामाजिक ओ पारिवारिक परिवेश बनाकऽ रखने छी? अपनाकेँ ओहन आदर्शक रूपमे छात्र समुदायक सोझाँ उपस्थित कऽ रहलाह अछि? कहय पड़ैत—नहि। अतः आवश्यक अछि जे शासन यन्त्रमे अनुशासनशीलता, पवित्रता, चारित्रिक उत्कर्षक विकास हो जकर अनुगमन नहि कयला उत्तर हमरालोकनि छात्र समुदायपर अथवा शिक्षापद्धति ओ शिक्षक समुदायपर दोषारोपण कऽ सकी।

वस्तुतः अनुशासनक पालन ने पुस्तकीय ज्ञान द्वारा, ने दण्ड विधान

द्वारा आ ने मंचपर डाढ़ भऽ उपदेशा-
त्मक व्याख्यान द्वारा संभव अछि ।
श्री अभ्यासक वस्तु थिक, जकर
विकास ने कोनो निश्चित स्थानमे
ने कोनो निश्चित अवधिमे सोमित
राखि संभव अछि, अपितु अपन
व्यक्तिगत आचरणमे, सामाजिक
वातावरणमे अनले सन्तां संभव भऽ
सकैछ । अनुशासन एक रूप थिक,
एक पद्धति थिक, जकर क्रमिक विकास
भऽ सकैछ, जाहिसँ जीवनक विकासमे
स्वतः सौन्दर्य उद्भूत होइत छैक ।
अर्थात् अनुशासन मानसिक स्वस्थता
थिक जे स्वस्थता लाभ कयला सन्तां
हम अपनाकेँ समाजक समक्ष एक
आदर्श व्यक्तिक रूपमे उपस्थित कऽ
सकैत छी । से मानसिक स्वस्थता
मनकेँ सत्प्रवृत्तिये दिस नियोजित
कयलासँ होइत छैक ।



अन्तरिक्ष-यात्री

मनकेँ शिव संकल्प दिस अनु-
प्रेरित करैत रहब, सेहो शाब्दिक
नहि, क्रिया द्वारा तखने ओहिमे मनमे
उत्पन्न विचार विवेक पूर्ण होयत आ
तखने संकल्पमे दृढ़ता आवि सकत ।
यदि अल्प साधन रहितो, अपन
आचरण द्वारा अपनाकेँ प्रसन्न राखि
सकब तँ स्वतः हमरासभक द्वारा सृष्ट
वातावरणमे पालित भेनिहार बालक
हमर अनुकरण करत आ ओकर जीवन
अनुशासित भऽ जयतैक ।

की अपना हृदयपर हाथ राखि
आजुक अनुशासनहीनताक हेतु सार्व-
जनिक मंचसँ चिन्ता व्यक्त कयनिहार,
शिक्षक समुदायपर दोषारोपण कयनि-
हार आत्मनिरीक्षण करबाक हेतु
उद्यत छथि ?

ई सभ होइतो छात्र समुदाय
सर्वथा दोषमुक्त नहि कहल जा सकैत
छथि । कारण जखन ओ अपन
भविष्यक निर्माणमे लागल छथि तँ
समाजमे विनू विद्या प्राप्त कयनहुँ
एहन लोकक अभ्यास देखवामे नहि
श्रीतनि जे सांसारिक सुख-सुविधा
प्राप्त करवामे कतेको विद्याविभव
सम्पन्नो लोकसँ आगाँ छथि, किन्तु
तेँ की हुनका ओही अलभ्य वस्तु
सुलभ छनि जे विद्या प्राप्ति द्वारा
होइत छैक ? नहि । अतः सांसारिके
सुख सुविधा प्राप्त करब विद्या प्राप्तिक

उद्देश्य नहि भऽ सकैछ । एहसँ किछु
दुर्लभ वस्तु संसारमे छैक जे विद्या
द्वारा प्राप्त होइत छैक । तेँ ओही
दुर्लभ वस्तुक प्राप्तिक हेतु अन्तरमे
शिव संकल्प होयबाक चाही । से होयत
एक क्रमसँ, एक पद्धतिसँ आ क्रमिक
अभ्याससँ । सह वस्तु थिक अनुशासन
जे जीवनक श्रेय ओ प्रिय धरि पहुँचा
सकैत अछि । तेँ ओकर उपेक्षा, ओकर
उल्लंघन कथमपि वांछनीय नहि ।

मिश्रदोला, दरभंगा ।

मधुमास

श्री कामानन्द भा 'कानन' एम० ए०

कोना कहब, थिक ई मधुमास ?
परिचित सभसँ मधुमास
परिचित युग-युग आ मधुमास
अछि आर्य वाक्य-
अवदत अछि ई प्रति चेतना
कोना कहब, थिक ई मधुमास ?
नियतिक आङ्गमे नव
किछु लता-विटपमे नव
अछि दिग-दिगन्तमे सख
नव-नव उमंग, नव-नव
कोना कहब, थिक ई मधुमास ?
परिपूरित पल्लवसँ एक
पतझड़सँ दोसर ठंड
अछि यह रूप प्रति आ
सर्वत्र व्याप्त ई मधुमास
कोना कहब, थिक ई मधुमास ?
अछि तप्त धरा आ तप्त
ग्रीष्मक ज्वालामे जल
निधन देशक निधन
अछि कार्य निरत, उर मूल-मूल
कोना कहब, थिक ई मधुमास ?
बिजुली पंखा, बंकु
दोसर दिस अछि दुःख
शोषित गरीब, धनवान
अछि कतहु रुदन आ कतहु
कोना कहब, थिक ई मधुमास ?
कण-कणमे अछि उल्लास
विहरय प्रति क्षण मधुमास
अछि जतऽ मुदा ई उमर
मधुमासक संगहि गुप्त तन
कोना कहब, थिक ई मधुमास ?

उच्च विद्यालय, बलुआ बजार, मु

गीत

श्री सिद्धेश्वर प्रसाद 'मंजु'

असगर कुटियामे बंसल जहि क्षण उदास
स्वप्न सदा के तिरिआयोल नित करइत नव-नव
अवतहि स्मरण खसँ अछि रे नयनक नभ-भलसँ सा
ओही कालक भाव-विकल जहि क्षण सुहर मनभ
निर्भ्रान्त क्षितिजमे छायेल ओ कारि केश सन ब
चुप्पे-चुप्पे रहि जाइछ के आबि आँखिमे सा
रे कटित पंख पंछीसन भू लुटित भेलहुँ ओहि
कल्पना हहरि भहरायल अंग-जगकेँ करइत पा

ग्राम-पो० हसुआ

मैथिलीक अनुखन चिन्तन करै त अनेक विचार, अनेक परामर्श, अनेक सुझाव, अनेक आलोचना, अनेक उत्तेजना, अनेक विवाद, अनेक संवाद आखिपर अबैत अछि आ चल जाइत अछि, भिन्न-भिन्न भागमे भिन्न-भिन्न लोक ओ संस्था यथाशक्ति मैथिलीक उत्तरोत्तर वृद्धिमे संलग्न अछि ।

मैथिलीक विरोध

एक आह्वान

एक चेतावनी

श्री चन्द्रबाबू मिश्र 'अमर'

श्री हजारि प्रसाद द्विवेदी तथा डा. श्री कत्रे सन भाषा विशेषज्ञकेँ सुजानक व्यंग्योपाधिसँ विभूषित कयल गेल अछि ताहिसँ हिन्दी समर्थकक अन्तरमे पोसाइत साम्राज्यवादी भावनाक सहज अनुमान कयल जा सकैत अछि ।

मैथिली साहित्य-संस्कृति संगम, गोरखपुरक सजग मन्त्री श्री महावीर लाल जाहि शीघ्रतासँ एहि दिस सभक ध्यान आकृष्ट कयलनि अछि से सर्वथा प्रशंसनीय थिक ।

एक भाग मैथिलीकेँ स्वीकृति प्राप्तिक बादो पुनः अपदस्थ करवाक हेतु पत्र-पत्रिकाक उपयोग कयल जा रहल अछि आ दोसर भाग तऽरे तऽर दिल्लीमे उच्च पदस्थ नेता सेहो सक्रिय छथि जकर पता डा. श्री जय-कान्त मिश्रक एक वैयक्तिक पत्रसँ लागल अछि ।

ओहि पत्रक अनुसार राष्ट्रपति सर्वपल्ली डा. सर राधाकृष्णनकेँ एहि तथ्य दिस ध्यान आकृष्ट कयल गेलनि जे प्राथमिक पाठशालामे माध्यमक रूपमे मैथिली कतहु नहि अछि । ई कथा एहन अधिकारी बज-

लाह अछि जे बिहारमे बहुतो दिन धरि रहि चुकल छथि आ बिहार सरकार द्वारा मैथिलीक माध्यम स्वीकार कयलाक बादो मैथिलीक प्रति शत्रुतापूर्ण भाव रखबाक कारणेँ सरकार द्वारा संचालित टेक्स्ट बुक कमीटीक दिससँ अद्यावधि दुइयो पन्नाक कोनो पोथी नहि प्रकाशित करवाक संग-संग शिक्षा विभागक उच्च पदाधिकारी द्वारा शिक्षक वर्गकेँ धमकबैत रहमाक सम्बन्धमे पूर्ण रूपेँ जनैत छथि ।

बिहारक नेता आ अधिकारी मैथिलीक अभ्युत्थति फुटलीयो आँखिये नहि देखऽ चाहैत छथि, जकर एक प्रमाण तँ पाठ्यग्रन्थ नहि प्रकाशित करब थिक आ दोसर प्रमाण तुरत-तुरत जनगणनाक रिपोर्टमे उल्लिखित बिहारी नामक भाषाक कल्पना थिक । अंगिका, वज्जिका आदि नव भाषाक जन्म देबाक कुचक्र भिन्ने तेसर प्रमाण कहल जा सकैछ ।

एतेक प्रमाणक रहितो यदि ब्यो ऊपरसँ विष्णुविष्णुहंरिहंरिः अपनाकेँ प्रमाणित करऽ चाहताह तँ भविष्यमे लाभ-लोभक व्यामोहमे फसल जन-नेता भले पवित्र मानि लेथिन, किन्तु हमरा विश्वास अछि जे अन्तरसँ जे राष्ट्र ओ समाजक प्रति कर्तव्य निष्ठा रखैत छथि से कथमपि एहि उपेक्षाकेँ उचित नहि मानि सकैत छथि ।

जनता एखनो अशिक्षिते अछि । जे किछु शिक्षित वर्ग छथि, हुनका अपने समस्यासँ पलखति नहि भेटैत छथि । विधायकलोकनि एकरा कोनो महत्त्वपूर्ण प्रश्न मानिते नहि छथि । जननेता वा जनसेवक कहौनिहार अपन दलक अंकुशक तऽरमे पड़ल छथि । तखन मैथिलीक समस्याक समाधान कोना हो ? श्री भक्तवत्सलम् अपन राज्यमे एखनो अनिवार्यतः हिन्दीक अध्यापन नहि आरम्भ कर-बाक घोषणा निर्भीकतासँ कऽ सकैत

मैथिली क्षेत्रक विधायक लोकनिक उत्तरदायित्व थिकनि जे जखन सिद्धान्ततः सरकार मैथिलीक माध्यम स्वीकार कऽ चुकल अछि तखन ओकरा कार्यान्वित करयबाक हेतु कटिबद्ध भऽ जाथि । माध्यम स्वीकृत भेलो उत्तर जे ओकर कार्यान्वयन नहि भऽ रहल छैक तकर छार-भार केवल मैथिलीभाषी सर्व-साधारणपर नहि छैक; बिहारक शिक्षा-विभाग एक तरहें बोथो थिक । आवश्यकता एहि बातक अछि जे जनप्रतिनिधिलोकनि जनाकांक्षाकेँ बुझथि आ जन-साधारणक एहि शंकाशित अभ्यु-विधाकेँ दूर करयबामे लागि पड़थि ।

छथि, श्री सुब्रह्मण्यम् केन्द्रीय मन्त्रिमण्डलसँ त्यागपत्र पर्यन्त दऽ सकैत छथि, किन्तु मैथिली क्षेत्रक विधायक वा सांसद विधान समामे अथवा लोक सभामे मैथिलीक औचित्यपूर्ण अधिकार प्राप्तिक हेतु अपन स्वर मुखरित करताह से साहस नहि !

गत वर्ष पटनामे सर्वदलीय विधायकलोकनिक एक सम्मेलन भेल छल । ओहि अवसरपर जाहि जोशक प्रदर्शन भेल तकरा कार्यान्वित करवाक दिशामे की करैत गेलाह ताहिसँ जनता अनभिज्ञे अछि ।

मैथिली क्षेत्रक विधायकलोकनिक उत्तरदायित्व थिकनि जे जखन सिद्धान्ततः सरकार मैथिलीक माध्यम स्वीकार कऽ चुकल अछि तखन ओकरा कार्यान्वित करयबाक हेतु कटिबद्ध भऽ जाथि ।

एतबा अवश्य जे जाही अनुपातमे शिक्षाक प्रसार-प्रचार भऽ रहल अछि ताही अनुपातमे मातृभाषाक महत्त्व बुझबाक रुचि उत्पन्न भऽ रहल अछि आ ओही दिन अथबे करत जहिया भाषाक प्रश्नकेँ उपेक्षित बुझनिहार दल अथवा व्यक्ति जनताक बीच जखन मतदानक हेतु हाथ पसार जैथिन तँ जनता अपन फड़िछा लेव,

टटका-टटकी मैथिलीक उपलब्धिमे अछि साहित्य अकादमी द्वारा मैथिलीकेँ मान्यता । जे १९५० मे होयब उचित छल से भेल पन्द्रह वर्ष पछाति अर्थात् १९६५ मे, किन्तु ई मान्यता एकरा नहि प्राप्त होइक ताहि हेतु सम्पूर्ण शक्ति लगौलाक बादो जखन सम्हारसँ बाहर भऽ गेलनि तखन हिन्दीक तथाकथित अन्ध समर्थक चाजि-भों मचबऽ लगलाह अछि । एही क्रममे दिल्लीसँ प्रकाशित एक हिन्दी पत्रिकामे जे मैथिलीक विरुद्ध विध-वमन कयल गेल अछि आ भाषा-सम्बन्धी भारत सरकार द्वारा संस्थापित ओ संचालित सर्वश्रेष्ठ संस्था साहित्य अकादमीक साधारणसभा द्वारा नियुक्त विशेषज्ञ समितिक सदस्य डा. श्री सुनीति कुमार चटर्जी, डा.

किन्तु सम्प्रति जे प्रतिनिधित्व कऽ रहल छथि से एहि प्रश्नकेँ जेँ गौण बुझैत छथिन तँ निश्चय ओ कर्तव्य-रूपत भऽ रहलाह अछि आ राष्ट्रक अहित कऽ रहलथिन अछि ।

साहित्यकारलोकनि तँ अपन बुन्द-बुन्द रक्त मुखबिते आबि रहल छथि, आरो किछु दिन सुखीताह, किन्तु साम्राज्यवादी मनोवृत्तिक परि-त्याग यदि अन्ध हिन्दी समर्थक आबो नहि कयलनि तँ एखन धरि जतेक अहित हिन्दीक कयलथिन अछि ताहूँ अधिक अहित संभव भऽ जयतैक ।

जेना भारत सरकार चीन वा पाकिस्तानक संग जतेक बेसी नरमी ओ समन्वयवादी नीति अपना रहल अछि ओ ओ दुनू शत्रु-राष्ट्र आरो बेसी क्रुद-फान मचीने जा रहल अछि, तहिना मैथिली भाषी क्षेत्र जतेक नरमी देखबैत अछि ततेक तथाकथित हिन्दीभक्त माथ चढ़ल जा रहल छथि । ओ लोकनि स्मरण राखथु जे मिथिलो हिन्दीक घोर विरोध करबाक हेतु अपनाकेँ सिद्ध करत ।

हम प्राथमिक शिक्षक संघोसँ आग्रह ओ अनुरोध करबैक जे ओ मैथिलीक विरुद्ध होइत पड़्यन्त दिस ध्यान देअय । जे सिद्धान्त स्वीकृत अछि तकर कार्यान्वयनक हेतु सरकार-पर दबाव दौक ।

मैथिलीभाषी क्षेत्रक मन्त्री, विधायक, सरकारी अधिकारीयो जन-ताक ध्यान आकृष्ट करय चाहैत छियनि जे प्राथमिक कक्षामे अविलम्ब मैथिलीक माध्यम अपनयबाक हेतु बतचित्त होथु ।

मिश्रटोला, दरभंगा ।



द्वन्द्व

: श्री धूमकेतु :

दू रेखामे बाझि गेल अछि ।
कुकरालूझ कर अछि डुनू
प्राण हमर कलहंत भेल अछि ।
पहिल बहुत तछुक छै
कोमल चन्द्र किरण सन ।
कारी भुजुड दोसर अछि
केचुआयल कड़ैत सन ।
दुनिवार संकृत होइत अछि रोम-रोमसँ
(सभ कहय विद्वान, मुदा अमरुख सत्ते छी ।
पड़ैत छी तकिया सन-सन मोटका किताब सभ

दुनियाँ भरि केर अकिल समायल अहाँक मायमे
किन्तु नयनमे पड़ि नहि होइ अछि भाव करेजक ?)
मनक गगनमे इन्द्रधनुष सन
उगि जाइत अछि पाँती चारू ।
रेखा पहिल घिँचा जाइत अछि मानस-पटपर ।
रागक मेहोँ ताग, स्वप्न केर तूत जेना हो
युगल कमलसँ मणिभर नाग-युगल धरि घोंचल
लागय झलकऽ साफ ओकर सभ मोड़ वक्रता
आ ओझरा जाइत अछि सभटा भाव-कल्पना
रेखा पहिल बान्हि लेने अछि अन्तस्तलकेँ ।

आ समक्ष अछि पुस्तक केर खूजल पन्ना पर
घोंचल रेखा स्याह, मोट लोहाक छड़ी सन ।
माड-पूर्ति, मुद्राक जटिल सिद्धान्तक व्याख्या ।
कुंभकर्णकेर नोकदार मोछोसँ जवबर ।
ई सशक्त अछि दोसर रेखा ।
पकड़ि बुद्धिकेँ बान्हि लेने अछि
चिन्तन, वचन, समस्त कर्मकेँ ।

डुनू रेखा भीड़ि गेल अछि ।
माथ-करेजक द्वन्द्व मचल अछि ।
कते मनोषी, कते कलाविद् कते वीरकेँ
इतस्ततः ई गोड़ि गेल अछि ।
सरिपहुँ बहुत तीक्ष्ण होइत छै धार खड्ग केर ।

आर० आर० डिग्री कालेज, जनकपुर, नं पाल

कथा: रथा

श्रीचन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'

मानसिक समस्त उल्लास चिन्तासँ ब्यस्त मानसमे आगिमे पड़ल स्फिरिटक काज करैत छैक, जहिना आगिक संयोग होइत स्फिरिट धू-धू कऽ जरि उठैत छैक आ कोनो उपचार ओहि अग्निक शमन करबामे विफल होइत छैक ।

अभावक स्थिति उत्पन्न भेल उत्तर मनक अभिलाषा कोशीक बाढ़िसँ आक्रान्त क्षेत्र-स्थित माटिक भीत जकाँ अनेरे सहिर-सहिरकऽ धरा-शायी भऽ जाइत छैक ।

गरीबीक दुनू पाटक बीच पड़ि मानव मनक समस्त कल्पना, भावना, कामना, मयदोसँ मेही भऽ पिसा जाइत छैक । अन्नक अभावक कारणेँ शामर भेल मुखमण्डल आ फुफड़ी पड़ल ठोर यदि कोनो पिता अपना सन्तानक अपन आखिये देखैत अछि तँ ओकर सम्पूर्ण धैर्यक चट्टान बालुक भीत जकाँ खहरि-खहरि दहा जाइत छैक । आदर्श विडम्बना बूझि पड़ैत छैक; सिद्धान्त प्रवचना बुझना जाइत छैक आ सत्यक ठोस धरातलपर ठाढ़

यदि वर्तमान दुर्लभ्य पवत तँ भविष्य अथाह समुद्र बूझि पड़ैत छैक ।

मनुष्य आखिर मनुष्ये थिक, कोनो मशीन नहि । मशीनो गरम भऽ गेलापर किछु क्षण विश्राम चाहैत अछि, तखन मनुष्य तँ हाड़-मांसक बनल एक ठूठर मात्र थिक । नहि बेसी तँ कमसे कम भरि पेट अन्न, भरि देह वस्त्र आ एहि साढ़े तीन हाथक शरीरकेँ लम्बायमान करवाक हेतु साढ़े चारि हाथ भूमि जे रोद, शीत, अन्हड़, बिहाड़ि, पानि, पाथरसँ ओहि शरीरक रक्षाकऽ सकैक, प्रत्येक मनुष्यकेँ अवश्य चाहिएक । एहि सँ अधिक चाहनिहार भले सियाख करैत हो, किन्तु एतवा तँ अनिवाय छैक ।

अपन पुरुषार्थ पर भरोस रख-निहार जीवनमे अयनिहार कोनो संकटसँ संघर्ष करबाक अद्भुत उत्साह रखैत अछि । विघ्न बाधासँ लड़बाक हेतु, जेना कोनो पहलमान नित्य शारीरिक व्यायाम कऽ अपन प्रतिपक्षी केँ परास्त करबाक मनसूबा बन्हैत रहैत अछि, तहिना मानसिक व्यायाम करैत विघ्नपर विजय प्राप्त करबाक उत्साह अन्तरमे जुटबैत रहैत अछि, किन्तु भूखल सन्तानक मुँह देखि अपन पुरुषार्थक समक्ष बहुत पैघ प्रश्न-वाचक चिह्न सोझामे आवि ठाढ़ भऽ जाइत छैक । ताहूमे यदि ओ कलाकार हो । कलाकारक दोसर अर्थ होइत छैक स्वाभिमानि । अन्तरसँ कलाक प्रति जकरा सहज स्नेह छैक ओ कोनो मूल्यपर अपन स्वाभिमानकेँ धक्का लागऽ देब स्वीकार नहि

कऽ सकैत अछि । स्वाभिमानक हत्या कलाक ह या थिक आ कलाक हत्या माने कलाकारक हत्या, किन्तु स्वाभिमान सभसँ भयंकर आघातो तखने लगैत छैक जखन ओकर अपन सन्तति अन्नक अभावमे ओकर स्वाभिमानक उपहास कऽ लगैत छैक ।

देशपर उमड़ैत चारु भागसँ संकटक मेघकेँ छिन्न-भिन्न करवाक हेतु उत्साहक बिहाड़ि चाही । आन्तरिक कलहाग्निकेँ मिश्रयवाक हेतु एकताक जल चाही । अभावक ओधिकेँ उपाड़ि कऽ फेंकि देबाक हेतु परिश्रमक कोदारि चाही आ एहि सभ भावनाकेँ उद्वुद्ध करवाक हेतु ओजस्वी साहित्य चाही । यैह सभ सोचि रमेश एहि वर्ष आबऽवला स्वतन्त्रता दिवसक उपलक्ष्यमे एक एहन अंकक सम्पादन ओ प्रकाशनक योजना दू मास पूर्व बना लेलक अछि । धमनीमे दौड़ैत रवतमे बिजुली उत्पन्न करऽवला विचार-प्रधान निबन्ध, अन्तरक तारकेँ एक बेर झन्झना देबऽवला कविता, रोम रोममे स्फूर्ति भरि देबऽवला कथा, मर्मकेँ वेधि देबऽवला व्यंग्य आदि सामग्रीसँ ओहि अंककेँ ओ सजा-ओत । ओ ओजस्वी कथाकार, तेजस्वी कवि, मनरवी लेखक आदिक सूची बना चुकल अछि ।

आइ ओ सभसँ पहिने एक एहन कथाकारक दुआरिपर पहुँचल जे अपन पुरुषार्थक भरोसपर आइ भरि अपना स्वाभिमानकेँ आहत नहि होमऽ दऽ सकल अछि । केबाड़ बन्द छैक जेठक प्रचण्ड आतप कण कण के

कंसारक बानु जकाँ बिषा कऽ ओरि देने छैक । एहन समयमे यद्यपि कतौ दुआरिपर जायब घनमोहनि नहि छैक, गेनिहारीकेँ आ परबंजकेँ किन्तु कार्यव्यस्त मनुष्य एहने समय निश्चिन्त भऽ भेटो दैन जीवन । अंगारजी एहने एक व्यस्त कलाकार थिकाह जे भौतिक मुक्त-मुक्तिव्यस्त वंचित रहितो अपन कलाक मनुष्य विकास आ स्वाभिमानक रक्षाक हेतु कोनो मशीनमे ह्योड़ा दुआ बन्द रहैत छथि ।

रमेश द्वारा केबाड़ी सख्खीना पर जखन केबाड़ी फुजतनि तँ अंगारजीक विचणं मुख मण्डल देखि रमेशकेँ अपन आखिपर विषासे नहि भेलैक । अनुखन प्रसन्न चित्त, दीप्त मुखाकृति, विनोदमय वाणीसहित अभ्यासी अंगारजी पञ्चाङ्ग अंगारक उपर पड़ल छाड़इक ममरी जकाँ स्याह किएक छथि ?

रमेशक मुखमण्डलपर अंकित होइत एहि प्रदनवाचक चिह्न अंगारजीक दृष्टिसँ इरोत नहि रहि सकलनि । अंगारजी, आउ आउ रमेश बाबू ! चकित होयबाक कोनो काज नहि, कहैत हाथ पकड़ि कऽ केबाड़ीक भीतर घीचि लेलथिन आ बाहमे पछवाक घोड़ापर चढ़ल इन्तरेसन करैत झरकीसँ अपना घरक रसा-करक हेतु चट दऽ केबाड़ी लगा देलथिन ।

—कोमहर अयलहुँ ?

—इच्छा भेल, आवि गेलहुँ ।

—इच्छा भेल किएक ? बि कारणे टिटही नहि लगैत छैक ।

रमेशकेँ कलाकारक प्रति असीम श्रद्धा छैक, से श्रद्धा सभ दिनसँ रहैत आयल छैक । स्वयं ओ अपनाकेँ कलाकार नहि मानैत अछि, किन्तु ओकर आजीविकाक मुख्य साधन थिक पत्रकारिता । रमेश एक मासिक पत्रक सम्पादक अछि आ एही माध्यमसँ कलाकार सभक यथायोग्य सम्मान करबाक प्रयत्न करैत रहैत अछि ।

—कुशल क्षेम, हाल चाल मूक गति विधि, लिखल पढ़ब आदि अनेक बातक जिज्ञासा भेल । सोचलहुँ जे

रविव, ४ जुलाई, १९६४

मिथिला मिहिर

१५

एकतुक समय अहाँ अवश्य गामपर पकड़ावब ते चल अयलहुँ ।

कुशल क्षेम ? कुशल क्षेम ई जे मटिया तेल नहि भेटलाक कारणे अन्हारेमे धर्म-पत्नीजी कोनो वस्तु लावऽ घरगेलीह आ सूतल बच्चाके देहपर पयर पड़ि गेलनि । बच्चाक ठुनू टुकड़ी भऽ गेलैक आ अपने जे चौकि कऽ खसलीह से चौकठिसँ कपार टकरयलनि आ कपार दू फाँक भऽ गेलनि । अपने ओगरे छी घर आ कोठामे आयल अन्न लुटिलैत छथि मुखिये, डोलर, लीडर, हाकिम । दू सांससँ अन्न नहि रहलाक कारणे नेनासभ भूखे कनैत-कनैत सूतल अछि । हमरा विश्वास अछि जे एक एहि उत्तरसँ अहाँके कुशल क्षेम, हाल-चाल, मूड, गतिविधि, लिखव पढ़व सब जिज्ञासाक पूर्ति भऽ गेल होयत । आव अहाँ अपन प्रयोजन कहू । अंगारजीकेँ दृढ़ विदवास छनि जे रमेश बिनु प्रयोजने कतहु जायबला जीव नहि बिकाह ।

किन्तु रमेश अंगारजीक करण दशा देखि योजनाकेँ मनमेन घाँटि लिखि तँ वस्तुतः परिश्रम निष्फल होइतनि तँ अपन विशेषांकक योजना कहि सुनौलनि । एकटा कथा . .

बुसलहुँ अहाँ पत्रकार थिकहुँ । जितक थिकहुँ । देशक सम्पूर्ण गति-विधिपर सूक्ष्म दृष्टि निक्षेप करैत ओसरायल समस्या सभक समाधानक हेतु अनुत्तम उद्दिष्ट रहैत छी, उत्कंठित रहैत छी, आकुल व्याकुल रहैत छी । अहाँ अपन कलमक नोकसँ

अजस्र उत्साहक स्रोत प्रवाहित कऽ देश ओ समाजक समक्ष उपस्थित सभ विषयमाकेँ भो धा कऽ निष्कलुप, निमल ओ निरापद बनय-वाक धुनिमे जेठक एहि प्रचण्ड दुपहरमे दुआरि-दुआरि अलख जगाय रहल छी, किन्तु सम्पूर्ण उत्तरदायित्वक भार शपथपूर्वक जे ग्रहण कयने छथि से शीत ताप नियन्त्रित भवनमे खसक टट्टी तर बैसल स्वभविष्यक योजनामे मस्तिष्कके नियोजित कयने छथि । की ई समस्या नहि थिक; की ई विषयमाकेँ उद्गम-स्थल नहि थिक; की एकर निराकरण अहाँक पत्रकारक कलम करबाक सामर्थ्य रखैत अछि ? नहि, कथमपि नहि । तथापि अहाँकेँ कथा चाही । एहन कथा जे देशक सूतल पीरपकेँ थापड़ मारि चेहा देअय, किन्तु आजुक कथा स्वयं व्यथाक साकार रूप ग्रहण कयने जा रहल अछि । अन्न-वस्त्र विहीन जन समुदायक मानसमे ओज भरबाक प्रयास ओहिना विफल होयत जेना चालनिमे पानि भरब । तथापि अहाँकेँ कथा चाही । आइ सम्पूर्ण समाजक व्यथा बृहत्कथाक आधार बनल अछि । घर-घरमे पसरल हाहाकार, आत्मा-आत्मामे श्रीनाइत चीत्कार कथा नहि तँ आर की थिक ? व्यक्ति व्यक्तिक अन्तरसँ बहराइत दीर्घ निदवास अपना संग एक-एक कथा वस्तु लऽ कऽ निःसृत होइत अछि । तँ अहाँकेँ कथा भेटत, किन्तु कथाकारक अकुलाइत प्राणकेँ की चाही से अहाँ सोचू ।

मिश्रटोला, दरभंगा ।

पर्वतारोहणमे तब कीर्तिमान

- श्री अदित्यताथ -

भारतक हेतु ई बड़ पैघ गौरवक विषय थिक जे भारतीय एवरेस्ट अभियान दल संसारक सर्वोच्च शिखर २९२२८ फुट ऊँच एवरेस्टपर चारि बेर सफलतापूर्वक चढ़ि पर्वतारोहणक इतिहासमे एक नव कीर्तिमान स्थापित कयलक अछि । एहिसँ भारतकेँ जे ख्याति प्राप्त भेलैक अछि तकर सर्वत्र प्रशंसा होइत अछि तथा एवरेस्ट अभियानदलक प्रत्येक सदस्यपर भारतवासीकेँ गर्व छनि । एहिठाम ई उल्लेखनीय जे लेफ्टिनेंट कमाण्डर श्री कोहलीक नेतृत्वमे १६ सदस्यीय दल गत फरवरी मासमे दिल्लीसँ नेपाल विदा भेल छल । ८५ दिनक श्रम, साधना आ संघर्षक बाद गत २० मईकेँ एहि दलक दू सदस्य प्रातः साढ़े नौ बजे शिखरपर पहुँचबामे सफलता प्राप्त कयलनि । एहि दुनू सदस्यक नाम थिक कैप्टन एम. एस. चीमा तथा नवांग गोम्बू । ई दुनू गोटे शिखरपर भारत एवं नेपालक राष्ट्र-ध्वज फहरौलनि तथा आधा घंटा ओतऽ रहि नीचा दिस आधार-शिखरक हेतु प्रस्थान कयलनि ।

एहि विजयपर अभियान दलकेँ देश-विदेशसँ बधाइक सन्देश आबिये रहल छलैक कि ताबत फेर २२ मईकेँ एहि अभियान दलक आर दू व्यक्ति-सोनम ग्यास्तु (४२ वर्ष) तथा सोनम नाम ग्याल (२३ वर्ष) चोटी

पर पहुँचलाह । ई दुनू गोटे ५० मिनट धरि शिखरपर रहलाह तथा आराम-नियमक चारि फुट ऊँच स्तम्भ ओतऽ गाड़ि ओहिमे भारतीय तथा नेपाली राष्ट्रिय झंडा फहरा देलनि । एतब नहि, ई दुनू गोटे ओहिठाम भगवान बुद्धक एक मूर्ति तथा किछु भारतीय सिक्का सेहो छोड़ि अयलाह । एहिसँ अतिरिक्त ओ शिखरकेँ एक नारिकेरो अर्पित कयलनि । अभियान दल एतबसँ सन्तुष्ट नहि छल । २४ मईकेँ एक फेर तेसर दल एवरेस्टपर पहुँचबामे सफलता प्राप्त कयलक । एहि दलमे 'सी. पी. बोहरा (२१ वर्ष) तथा अंगकामी (२४ वर्ष) पाँचे एगारह बजे दिनमे शिखरपर पहुँचलाह । एहि तेवारा विजयसँ भारतीय दल अमेरिकी पर्वतारोही दलक सम-कक्षता प्राप्त कयलक जे (अमेरिकी) १९६३ मे एवरेस्टपर तीन बेर चढ़ि चुकल छल

तेसर बेरक सफलताक बाद एहि आशयक समाचार प्रसारित कयल गेल जे भारतीय एवरेस्ट अभियान दल चारिम बेर शिखरपर पहुँचि पर्वतारोहणक इतिहासमे नव-कीर्तिमान स्थापित करबाक हेतु प्रयत्नशील अछि । किन्तु एहि समा-चारपर सहसा लोककेँ विदवास नहि भेल छलैक । परन्तु २६ मईकेँ भारतीय दल जखन चारि बेर एव-

लेफ्टिनेंट कमाण्डर श्री कोहलीक नेतृत्वमे भारतीय पर्वतारोही दल चारिखेप संसारक सर्वोच्च शिखर सरगमाया (एवरेस्ट) पर चढ़ि एक नव कीर्तिमान स्थापित कयलक अछि । एहि विजय-अभियानमे भारतकेँ विशेष गौरव ओ प्रतिष्ठा भेटलक अछि । ई भारतीयलोकनिक साहस ओ शौर्यक एक अभूतपूर्व घटना थिक ।

शिक्षाक स्वरूप

श्री चन्द्रबाथ मिश्र 'अमर'

जनतन्त्र माने जनताक राज्य; अर्थात्, जनता द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधिलोकनिक बहुमतसँ बनाओल विधानक अनुसार राज्यक व्यवस्था। जनता द्वारा सुयोग्य व्यक्तिक निर्वाजनक हेतु, जन जनमे योग्यताक माप-दण्ड बूझबाक हेतु अनिवार्य शिक्षा सिद्धान्त ओ व्यवहार दुनू दृष्टिये नितान्त प्रयोजनीय थिक। एहि सिद्धान्तक विरुद्ध बजबाक समावेश कतहु नहि अछि आ ने एहि प्रसंग विरोधक कतहु स्थाने भेटि सकैत अछि। अतः कोनो देशक सरकार यदि जनतन्त्रक समुचित विकासक हेतु अनिवार्य प्राथमिक शिक्षाक घोषणा अपना संविधानमे करैत अछि तँ करबक चाहिऐक, यदि नहि करैत अछि तँ जनतन्त्रात्मक प्रणालीक विरुद्ध आचरण करैत अछि।

अपनो देशक संविधान एहि प्रकारक घोषणा करैत अछि जे आदिसँ चौदह वर्षक अवस्था धरिक प्रत्येक नेनाकेँ निःशुल्क प्राथमिक शिक्षा अनिवार्य रहत। एहि नीतिक कार्यान्वयनमे सरकार पूर्णतः संलग्न रहितो एखनधरि सम्पूर्णतः ई नीति कार्यान्वित नहि कऽ सकल अछि। एहि हेतु जे समय अपेक्षित अछि से लगबे करत, किन्तु एहि प्रसंग प्रथमतः विचारणीय प्रश्न जे उपस्थित अछि ताहिपर गंभीरतासँ विचारो करब नितान्त आवश्यक अछि।

शिक्षाक आलोक पसरय, अज्ञानक गहन तिमिरमे अन्धरायल समाज अपन मताधिकारक मूल्य बूझबामे सक्षम हो आ जनताक समुचित प्रतिनिधित्व द्वारा राष्ट्रिय भावना ओ राष्ट्रिय एकताक भावनाक संग अपन-अपन कर्तव्य बोधक भावना जाग्रत हो; राष्ट्रिय सम्पत्तिकेँ अपन सम्पत्ति बूझि व्यक्ति मात्र ओकर सुरक्षाक दायित्व बूझय ई तँ सर्वथा आवश्यक थिक; किन्तु शिक्षाक आलोकक बदलामे अपरिपक्व शिक्षाक धूमसँ जन-मानस एहि प्रकारेँ आच्छन्न भऽ जाय जे अन्तरक चक्षुकेँ फुजबाक स्थानमे बाह्य चक्षु सेहो चोन्हरा जाइक, संविधानक ई अभिप्रेत कथमपि नहि भऽ सकैत छैक। भारतमे समाजवादक स्थापना हो, संसारमे समाजवादक स्थापना हो, संसारक श्रेष्ठ जननेतालोकनि यह घोषणा करैत आबि रहल छथि। यद्यपि भारतमे सभसँ प्रबल बहुमत रखनिहार कांग्रेस दल आरम्भमे एहि प्रकारक नीति निर्धारण नहि कयने छल। महात्माजीक कांग्रेस रामराज्य, जन कल्याण राज्य आदि प्रकारक राज्यक कल्पना कयने छल, किन्तु पं. नेहरूक कांग्रेस अवाड़ी अधिवेशनमे अपन नीति निर्धारित करैत समाजवादी राज्यक स्थापनाक घोषणा कयलक आ आजुक कामराजक कांग्रेस ओही घोषणापर दृढ़ अछि। कामराज तँ ईहो घोषित कऽ चुकलाह अछि जे समाजवादी व्यवस्थाक विरुद्ध भावना रखनिहार यदि कांग्रेसमे होथि तँ खाहे हुनका ई सिद्धान्त स्वीकार कऽ लेबक चाहियनि अथवा कांग्रेसकेँ छोड़ि स्थान रिक्त कऽ देबाक चाहियनि।

ई सभ बात तँ बड़ सुन्दर, किन्तु एक प्रश्न ई उठैत अछि जे राजतन्त्र रहितो भारतमे सामाजिक व्यवस्था जे छल से उपयुक्त छल वा नहि ताहिपर विचार कयल गेल? निश्चित रूपेँ ई मानऽ पड़त जे भारतीय सामाजिक व्यवस्थाक अध्ययन विनु कयने

ई मानि लेल गेल जे एहि देशमे परम्परासँ जे कोनो व्यवस्था छल से सभ प्राचीन होयबाक कारणेँ अप्राप्त थिक। तकरा स्थानपर नवीन व्यवस्था होयबाक चाही। सेहो नवीन व्यवस्था आखि मूनिक्स पश्चिमीय देशमे जेहन अछि तेहने होयबाक चाही। परिणामतः सिलहटसँ आनल नारंगीक कलम जेना सार्द्रभूमि मिथिलाक बाड़ीमे रोपला सन्तान नारंगीक बदला जम्बीरीनेबोजकाँ अम्मत होइत अछि तहिना आन देशसँ उधार आनल ई सामाजिक व्यवस्था अपन माधुर्य छोड़ि अम्लतासँ परिपूर्ण देखना जा रहल अछि।

कृषि प्रधान देश भारतमे कृषि-सम्बन्धी समस्त साधन किछु जाति विशेष द्वारा बनाओल जाइत रहल अछि। एहिना गार्हस्थ्य जीवनक उपयोगी प्रत्येक वस्तुक हेतु भिन्न-भिन्न जाति द्वारा पारम्परिक व्यवस्था स्वीकृत कयल गेल छल आ किछु अंशमे विद्यमान अछियो। एहि हेतु कोनो शिक्षण अथवा प्रशिक्षणक व्यवस्था नहि रहल अछि। सैद्धान्तिक ज्ञानक अभाव रहितो व्यावहारिक ज्ञानक आधारपर एक कमारक वंश-धर काठक सभ उपयोगी सामान, लोहारक वंशधर लोहाक सभ उपयोगी सामान, कुम्हारक वंशधर सभ माटिक उपयोगी सामान बनयबामे कुशल रहल अछि। एही प्रकारेँ विभिन्न गृह उद्योग, कुटोर उद्योग गाममे, प्रचण्ड देहातमे विना कोनो प्रशिक्षणक चलैत आबि रहल छल आ अंशतः चलि रहल अछि। किन्तु एहि दिशामे क्रमिक ह्रास भऽ रहल अछि, आ शिक्षाक स्वरूप यदि यैह रहल तँ ओ दिन दूर नहि जहिया कौलिक वृत्तिक जे कौशल विना कोनो प्रशिक्षणक विकसित होइत रहल अछि से लुप्त भऽ जाय।

एक भाग भारत सरकार देशसँ निरक्षरता दूर करबाक दिशामे सचेष्ट रहितो, यूनेस्कोसँ सहायता प्राप्त करैत रहितो कतेक सफलता प्राप्त कऽ

सकल अछि तकर प्रमाण एहीसँ भेटैत अछि जे एक रिपोर्टमे कहल गेल अछि जे शत प्रतिशत भारतीयकेँ शिक्षित करबामे सय वर्ष लागि जायत किन्तु गंभीरतासँ यदि विचार कयल जाय तँ सय वर्ष लगौलो उत्तर शत प्रतिशत शिक्षित भऽ जयताह से सन्दिग्ध अछि। एकर प्रमुख कारण ई अछि जे शिक्षाक जे स्वरूप एखन चलि रहल अछि, साधारण जनता एहि दिस आकृष्ट नहि भऽ रहल अछि, अपितु शिक्षाक परिणाम स्वरूप जखन शिक्षित वर्गमे बेरोजगारीक जटिलता बढ़ले जा रहल अछि तखन कौलिक आजीविकाक साधनकेँ छोड़ि जीविकाक हेतु रने वने पात तोड़बाक हेतु एहन शिक्षा अपना धिया-पूताकेँ देव क्यो किएक श्रेयस्कर बूझत ?

एक तँ श्रमिक वर्ग अपनाकेँ ओहि स्थितिमे पाबिये ने रहल अछि जे ओ अपन धिया पूताकेँ पाठशालामे पठा सकय। आठ वर्ष दस वर्षक अवस्था भेलापर ग्रामीण क्षेत्रक बोनिहार परिवारक पालन करबामे अक्षम रहलाक कारणेँ अपन-अपन नेनाकेँ गृहस्थक ओहिठाम गाय महींस चरयबाक हेतु टका टुकुर दरमहा अथवा दस पाँच कट्ठा खेत बटाइ प्राप्त करबाक हेतु जीविकापन्न कऽ देल करैछ। तहिना शहरी क्षेत्रक बोनिहारकतहु कोनो केबिनमे वाकतहु आइसक्रीम, चिनियाँ बदाम, घुघनी, दलपूरी, लेमनचूस आदि वस्तुक व्यापार करबाक काजमे लगा देल करैछ। एहि हेतु सरकारक दिससँ व्यवस्था कयलो उत्तर शिक्षा प्राप्त कयलाक बाद शारीरिक श्रमसँ देह चोरबैत देखि अभिभावकलोकनि आतंकि रहैत छथि जे भविष्यमे ई शिक्षा समस्या बनि ठाढ़ होयत। यैह सभ कारण अछि जे शत प्रतिशत लोक शिक्षित होयबाक दिस रुचि नहि देखा रहल अछि।

विगत बीस वर्षसँ एक शिक्षकक रूपमे काज करैत रहलाक कारणेँ व्यक्तिगत अनुभवक आधारपर दू गोटा घटनाक उल्लेख करब उचित बूझैत छी।

एक कमार जे स्वयं अशिक्षित रहितो हर-फारक अतिरिक्त टेबुल-कुसंग आदि वस्तुवाक कलामे निपुण रहलाक कारणेँ हराहरी सय सवा सयमासिक अर्जनकरैत छल ओकरा दू टा बेटा। सेहन्तासँ ओ जेठकाकेँ

जातिवादकेँ निर्मूल करबाक जतेक सिद्धान्त छाँटल जा रहल अछि ततेक ई बढमूल भेल जा रहल अछि।..... समाजवादक समुचित विकासक हेतु समाजमे रहनिहार प्रत्येक वर्गक लोक एक दोसराक सापेक्ष रहबे करत। तेँ शिक्षाक स्वरूपपर चिन्तन करैत काल एहि तथ्यकेँ ध्यानमे राखब परमावश्यक जे कौलिक काय ओ जीवन-प्रणालीकेँ प्राचीन बूझि ओकरा नकारल नहि जाय, अपितु ओहि दिशामे आर अपेक्षित प्रोत्साहन देल जाय, जाहिसँ पारिवारिक ओ सामाजिक आर्थिक व्यवस्था दृढ़सँ दृढ़तर हो, एहन नहि हो जे लोक आधा तिसरि आधा बटेर बनिकऽ एकदम बेकार भेल पड़ल रहय।

प्रवेशिका धरि पढौलक। अपन विद्यार्थी जीवनमे ओ कहियो स्कान बसिला छुबो नहि कयलकैक। छोट बेटा गोमक प्राथमिक पाठशालामे पढैत छलैक। प्रवेशिका परीक्षा उत्तीर्ण भेलाक बाद जेठका बेटा मथुखी भऽ गेलैक। ने ओ गृहस्थीक कोनो काज करबाक क्षमता रखैत छलैक ने रत्ना पकड़बाक। खयत पीत नीक निकुत, ओढ़त पहिरत चिक्कन चुनमुन, किन्तु उपार्जन करबाक काल ट टरुम टुम। अन्तमे प्रतिक्रिया स्वरूप ओ अपन छोट नेनाकेँ पाठशालासँ हटालेलक आसंग-संग काज करबाक लागल। आव जेठका कतहु साठि पँसठिपर नोकरी करैत छैक आ छोटका अपन कौलिक कौशलसँ सम्पूर्ण परिवारक भरण-पोषण करैत छैक।

दोसर एहने उदाहरण एक कुम्हारक अछि। ओकरा चारिटा बेटा। जेठकाकेँ ओ विद्यालयमे पढौलक जे तीन बेर धरि परीक्षामे बैसलाक बादो उत्तीर्ण नहि भऽ सकलैक। ओ सिकरेट पीबे करतैक, साबुन लगयबे करतैक, शहरमे रहलाक कारणेँ सिनेमा देखबे करतैक, ताहि हेतु वरसँ चोरा-नुका कऽ पाइलऽ कऽ पार भऽ जाइत छैक। संयोगसँ ओहि कुम्हारकेँ कहलैक जे तँ आन-आन बेटाकेँ पढ़बैत छह किएक नहि? ओकर उत्तर छलैक जे सरकार! एकटाकेँ पढौली तकर फल भोगैत छिकी, फेनो ऐसने काज करव? अपने ओइठिनकेँ इसकूलमे पढ़बैत छिएक। मट्टी अर्नैत हय, खपरा, मडरा, टोटिया, प्याली तस्ती सब बनबैत हय। दोसरकेँ मुरुत सब वनावे केँ सिखा रहल छी, सब छोड़ा वाँहि पुरैत हय आ ऊ बड़का घरसँ ढेउआ कौड़ी चोराकेँ ले जाइत हय आ इलबाइस करैत हय। यद्यपि एहन अनेक उदाहरण अछि, किन्तु किन्तु वर्तमान शिक्षा पद्धतिक प्रति जन साधारणमे कोन प्रकारक आस्था बनि रहल अछि तकरा स्पष्ट करवाक हेतु उपर्युक्त दुइयो गोट उदाहरण पर्याप्त बूझल जायत।

केन्द्रीय श्रम एवं नियोजन उप-मन्त्री श्री आर. के. मालवीय वजलाह अछि जे एक भाग भयंकर बेरोजगारीक बौमस्या राष्ट्रक समक्ष मुरसा जकाँ मुँह लोने ठाढ़ अछि आ दोसर दिस उपर्युक्त योक्तक अभावक कारणेँ अनेक सजना समुचित रूपेँ कार्यान्वित

कविसँ

श्री गोपीकृष्ण, एम० ए०

कवि किछु गाउ ।
अपन हृदयकेर
आर दिमागिक,
नव स्फूर्तिग झट बऽ छिटकाउ,
कवि किछु गाउ ।
गीत बहुत गोलहुँ प्रासादक
रुग्ण, गलित, जर्जर समाजकेर
ठीकेदारक
ऋद्धि तिद्धिकेर
भव समृद्धिकेर
वन्दन नमन सतत कयलहुँ अछि
सुन्दरताकेर
छन्द-बन्ध संगीत-रागमे
तान सुनौलहुँ
प्रिया-मित्रनकेर
आर विरहकेर रोदन कयलहुँ
झूठ-मूठ जकरा-तकरा
अभिवन्दन कऽ
कविताकेर नाक कटाय डुबौलहुँ
नाइरि पकड़ि सतत चललहुँ
जे देलक गरीबी
आर विषमता
कुंठा आर विवशताकेर जे जाल बनौलक
शोणित सोखि लेलक देहक जे
छल-वलसँ बनि जाँक समाजक
त्याग पुरना ढोंग
कि सभ तरि नव ज्वाला अछि
नव वैज्ञानिक दृष्टि ग्रहण कऽ
सातो स्वरसँ गाबि उठू
जे परम सत्य हो
शिव-सुन्दर हो
कोण-कोणतँ सत्य खींचि
वैज्ञानिक व्याख्या करू
कि कविता शिव-सुन्दर हो ।
कि कविता शिव-सुन्दर हो ।

बी० डी० ओ०, विक्रमगंज, शाहाबाद ।

नहि भऽ पवैत अछि। तेँ ओ अवाधिन कालेज प्रवेशपर प्रतिबन्ध लगायब परमावश्यक बूझि रहल छथि ।

पत्रमे प्रकाशित एक विज्ञापनमे जात होइत अछि जे टेकिनिकल शिक्षा प्राप्त ८७६००० व्यक्ति प्रयोजन केवल तृतीय पंचवर्षीय योजनामे अछि, किन्तु एहि दिशामे सन्तोषजनक प्रशिक्षित व्यक्ति उपलब्ध नहि भऽ रहल छथि जखन कि पँसठि हजार बेरोजगार व्यक्ति एक मात्र दिल्लीमे पड़ल छथि जे किरानीक काज चाहि रहल छथि। देशक हेतु ई चिन्तनीय थिक वा नहि से विचारणीय ।

एतावता ई सिद्ध अछि जे सम्प्रति जाहि प्रकारक शिक्षा व्यवस्था देशमे चलि रहल अछि ताहिसेँ देशक कल्याणक अपेक्षा अकल्याण अधिक होय-वाक संभावना ।

शिक्षाक स्वरूपक सम्बन्धमे अपन अल्प अनुभव ओ अल्प योग्यताक आधारपर हमर मत ई अछि जे साक्षरता टा अनिवार्य नहि मानि प्रवेशिका पर्यन्त अनिवार्य अवश्य बूझल जाय, किन्तु ज्ञानक विकासक हेतु नितान्त प्रयोजनीय जे विषय भाषा, गणित, इतिहास, भूगोल से अनिवार्य राखल जाय, ताहि संग जाहि जातिक जे कौलिक आजीविकाक साधन रहलैक अछि ओ विषयक एक पत्र अनिवार्य कऽ देल जाय। यथा कुमार नेनाकेँ काठक वस्तु, लोहारक नेनाकेँ लोहाक वस्तु, कुम्हारक नेनाकेँ माटिक वस्तु, चमारक नेनाकेँ चमड़ाक वस्तु, सोनारक नेनाकेँ सोना चानीक वस्तु, जोलाहक नेनाकेँ सूत ओ बुनाइक वस्तु, कृषकक नेनाकेँ कृषि सम्बन्धी, आदि वनयवाक, उत्पादन करबाक हेतु एक पत्र अनिवार्य कऽ देल जाय तकर उत्तीर्णक पचास प्रतिशत राखल जाय। एहि तरहेँ ओहि विषयक प्रति रुचि रहतैक आ ओहि विषयमे ओहि छात्रकेँ क्षमता जतेक सुविधासँ प्राप्त भऽ सकैत छैक ततेक अनका नहि ।

किछु व्यक्तिकेँ ई आशंका भऽ सकैत छनि जे एहिसँ जातिवादकेँ प्रश्रय भेटत जकरा सरकार सिद्धान्ततः निर्मूल कऽ देब चाहैत अछि ।

एहि आशंकाक सम्बन्धमे विनम्र शब्देँ हम तिबेदन करव जे एहि जातिवादकेँ निर्मूल करवाक सिद्धान्त जतेक (शेष पृष्ठ २४ पर)

होमसंवाला अधिवेशनमें स्वतन्त्र पार्टीक अधिकतर विधायक एक नव विरोधी दलक रूपमें भाग लेताह । पार्टीक बैसकमें ई तय भेल अछि । दलक नेता श्री कामाख्या नारायण सिंह चुनय-लाह । ओ जनौलनि-सभामे ५०, परिषदमे ७, लोक सभामे ६ आ राज्यसभामे २ सदस्य हमरालोकनिक छथि ।

ज्ञातव्य जे एहि पार्टीक विलयन कांग्रेसमें अद्यावधि नहि भेल अछि तें उक्त डेग उठाओल गेल ।

विधानमण्डलक भाँखी

सहाय-मन्त्रि मण्डलक प्रति अविश्वास प्रस्तावक अनुमति--वर्षाकालिक अधिवेशन प्रारंभ

पटना, १६ जुलाई । आइ विहार विधान सभामे अध्यक्ष डाक्टर श्री लक्ष्मीनारायण 'सुधांशु' विरोधी दलके श्री कृष्णवल्लभ सहायक मन्त्रिमण्डलक विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव प्रस्तुत करवाक अनुमति दऽ देलथिन । प्रस्तावक पक्षमें ३१ मत आयल । एहिमें संसोपा, प्रसोपा, जन-संघ, कम्युनिस्ट आ विघटित स्वतन्त्र पार्टीक एक सदस्य सम्मिलित छलाह ।

ज्ञातव्य जे आइसँ सभाक वर्षा-कालिक अधिवेशन प्रारंभ भेल । प्रस्तावमें कहल गेल अछि जे सहाय-मन्त्रिमण्डल राज्यमें व्याप्त खाद्यान्नक महगीकेँ रोकवामे असमर्थ रहल अछि । तें अकाल स्थिति यत्र-तत्र व्याप्त अछि । अतः एहि सरकारकेँ बल रहवाक अधिकार नहि ।

प्रस्तावपर २८ आ २९ जुलाईकेँ बहस होयत ।

एक सदस्य ध्यानाकर्षण प्रस्ताव द्वारा खाद्य संकट आ महगीक हेतु सरकारकेँ पूर्णतः उत्तरदायी जनौलनि ।

मिथिला-विश्वविद्यालयक माड.

श्री रमाकान्त झा (संसोपा) जनौलनि जे सरकार मिथिला विश्व-विद्यालयक स्थापनाक हेतु वचनबद्ध अछि, किन्तु राजनीतिक गोटी बैसय-वाक क्रममें एहि प्रश्नकेँ टारऽ चाहैछ । श्री प्रेमचन्द्र मिश्र (कांग्रेस) जनौलनि जे एहि माड.पर सरकार शीघ्र

ध्यान देअय, किएक तँ ई पोने दू कोटि जनताक माड. थिक । श्री तेजनायण झा (कम्युनिस्ट) जनौलनि जे एकर अपूर्ति ओतुक्का जनताक संग विश्वास-घात थिक ।

कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्व विद्यालय कानून संशोधित

दरभंगा कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय विधेयकमें संशोधन भेल जे स्वीकृत भेल । उक्त बिलक अनुसार सिनेट, सिण्डिकेट आ शैक्षिक परिषदक संघटनक प्रश्न आब मार्च १९६६ धरिक हेतु टरि गेल ।

कारजमें सांस्कृतिक कार्य-क्रम

कारज (दरभंगा), २८ जून । कारज नाट्य परिषदक तत्वावधानमें २४ और २५ जनकेँ क्रमशः हिन्दी नाटक 'कलिंग विजय' आ पंडित गोविन्द झा लिखित मैथिली नाटक 'वसांत क सफल प्रदर्शन कयल गेल । अभिनयक निर्देशन श्री शिवनारायण चौधरी, एम० ए० आ श्री धनेश्वर मिश्र कयलनि । सर्व श्री नमो-नाथ झा, शशिकान्त चौधरी, जय-चन्द्र झा, राधाकृष्ण चौधरी, आनन्द कुमार चौधरीकेँ सफल अभिनय करवाक निमित्त पुरस्कार देल गेलनि ।

शुभ विवाह

चहुटा (दरभंगा) । श्री जगदीश झाक पुत्र श्री रामसागर झा (अर्थ-शास्त्र एवं समाजशास्त्र 'आनर्स' चन्द्र-धारी मिथिला महाविद्यालय, दरभंगा) सवास निवासीक पाणि-ग्रहण चहुटा निवासी श्री बलदेव चौधरी (संयोजक शांति केन्द्र, चहुटा)क पुत्री सुश्री इन्दिरासँ ७-७-६५केँ सम्पन्न भेल ।

वैवाहिक समाचार

श्रीयुत राजेन्द्र चौधरी एम. ए. चहुटा (कमतील)क पुत्रीक पाणिग्रहण स्वर्गीय श्री सिहेश्वर झा बरहाक कनिष्ठपुत्र श्रीमृत्तिनाथ झा बी.कम. क संग तिथि ४-७-६५ ई. तदनुसार रविवारकेँ सोल्लास सम्पन्न भेल । एहि अवसरपर अड़ोस-पड़ोसक अधिकांश गण्यमान्य एवं वरिष्ठ व्यक्ति वर-वधूक प्रति शुभकाना प्रगट कयलनि ।

विधायक गण प्रतिरक्षा मंत्री चौहानसँ शिक्षा लेखु

मधुबनी (दरभंगा), १८ जुलाई । पछिला दिन अखिल भारतीय मैथिली साहित्यगोष्ठी मधुबनीद्वारा आयोजित प्राथमिक मैथिली शिक्षा सम्मेलनमें श्री एकनारायण चौधरी एम. एल. ए. अपन उद्गार व्यक्त करैत बजलाह जे लहेरियासराय सर्किट हाउसमें प्रतिरक्षा मंत्री चौहान द्वारा व्यक्त एहि उक्तिसँ हमरा ओहिठामक विधायककेँ शिक्षा ग्रहण करवाक चाहियनि जाहिमें ओ कहने छलाह जे 'हमर मातृ भाषा मराठी थिक । हम जान दऽ देव, किन्तु अपन भाषा नहि देव' ।

श्री एकनारायण चौधरी जनौलनि जे यदि हम विधायक गण जागरूकतापूर्वक एहि प्रश्नपर सरकारसँ प्रश्न करैत रही तँ कोनो कारण नहि जे सरकार मैथिलीमें पाठ्य पुस्तक नहि छपावय । यदि भारतक प्रतिरक्षा-मंत्री अपन मातृ भाषा प्रेमक कारण देशद्रोही नहि तँ हमरा लोकनि कोना देशद्रोही होयब, जाहि डरें हमरा लोकनिक मुँह नहि फुजैत अछि ।

शिक्षाक स्वरूप ० ० ० (पृष्ठ १०क शेषांश)

छाँटल जाइत अछि ततेक ई बढमूल भेल जा रहल अछि । राजनीतिक क्षेत्रमें एकर नग्न नृत्य सभ देखिये रहल छी । अर्थात् समाजवादक समुचित विकासक हेतु समाजमें रहनिहार प्रत्येक वर्गकलोक एक दोसरक सापेक्ष रहबे करत । एक प्रकारक जातिवाद निर्मूल करवाक पाछाँ राष्ट्रक शक्तिक अपव्यय भऽ रहल अछि आ दोसर दिस दोसर रूपमें वर्ग सभ टाड़ भऽ रहल अछि । अतः पूर्वक सामाजिक व्यवस्थाकेँ प्राचीन मानि अवहेलना कयलासँ नवीन समाजक निर्माण नहि भऽ सकैछ जे स्वतन्त्रता प्राप्तिक अटठारह वर्षक बादो समाजक स्वरूप अछि सँह प्रमाणित करैछ, तँ ओहिमें आयल जे दुर्गुण तकर परिष्कार कऽ ओही पद्धतिपर सुसंस्कृत समाजक नव निर्माण संभव होयत, शिक्षाक उद्देश्यमें परिवर्तन होयत आ शिक्षा आजीविकाक साधन भऽ सकत, बेरोजगारीक समस्या नहि ।

मिश्रटोला, दरभंगा

रवि, २५ जुलाई, १९६५
अल्जीरियाक सैनिक (पृष्ठ ८क शेषांश)

ई खबरि सुनि एहि नव मैथिली शासनक विरोधमें देशमें जे प्रदर्शन प्रारम्भ भेल तकरा सशस्त्र विरोध दबवऽ लागल । शासनतयाराजनीतिक दलसँ बेनबेलाक सपथकबोलीनि हटाओल जाय लागल । किन्तु शासनक विरोधमें जे आगि भेल एखनो मिझायल अछि नहि-अपन थिक मिस्रयवो नहि करय ।

सन् १९६३ में बेनबेलाक सभक राष्ट्रियकरण करवाक निरूपण जे प्रयास शुरू कयलनि, तँ अघिकारीलोकनि ओही समयमें जे विरोधी बनि गेलथिन । फेरु १९६४ में जे राष्ट्रिय मुक्ति मोर्चा सम्मेलन भेल छल ओहिमें एक नव बेनबेलाक हारिये मैथिली ई स्थिति देखि बेनबेलाकेँ कनल बुमेदियँनसँ समझौता करऽ पड़लनि आ सत्ताह्नुक राजनीति समितिक सत्रह स्थानमें आठ वीर अघिकारीलोकनिकेँ देबऽ पड़लनि एहि समझौताक बाद बुमेदियँन आ अधिक शक्ति लगाकऽ बेनबेला विरोधीसभक दमन कयलनि । बुमेदियँन एतबेसँ सन्तुष्ट नहिछल प्रतिरक्षा मंत्री छलाह । विस्फोटक, तोप, हवाई जहाज आदि कानेक शस्त्रास्त्र मंगाकऽ अपन सेना शक्ति बढबैत रहलाह । आ, बेनबेलासँ सत्ता छीनि स्वयं ओ उपयोग करवामे समयों भेलाह बेनबेला एखन कतऽ आ कोन अवस्था में छथि से बुमेदियँन आ हुनक सत्ताक किछु व्यक्तिक अतिरिक्त क किछु ज्ञात नहि छैक । किछु दिन बहुत हो-हुला भेल छलैक ते बुमेदियँन सरकार दिससँ कहल छलैक जे बेनबेला सुरक्षित स्थिति अछि आ स्वस्थ छथि ।

राजनीतिक पर्यवेक्षकलोकनि अनुमान छनि जे नव सरकार अग्रिम छौ मास संकटक रहत । तत्परतासँ एखन नव प्रशासन कऽ रहल अछि से यदि जारी रह सम्भव थिक, अल्जीरियाक जन जीवनस्तरमें सुधार भऽ जाइक । मिसे तखने सम्भव होयत जखन जनत बेनबेला बिसरि जयथिन । एह नव प्रशासन प्रचार द्वारा कोनो बाकी नहि रखने अछि ।

आर्यावर्त पत्र

आग्रह

: श्री 'वन्दनाथ मिश्र 'अमर' :

न फोलू सखि ! कजरायल नयन लजंती ई पावस रानी ।
ई थिकीह ऋतुराजक रानी
अहाँ हमर जीवन - धन
हिमक मिलन छनि छनिक, अहक सड.
हमर मनक दुढ़ बन्धन
नुकौने रह कनक घट बिना पियासहुँ मरता विज्ञानी ।
लजंती ई पावस रानी

चंचल पग अगुआयल मगपर
बाजि, उठत मंजीर
मन्मथ मन मथि-मथि पछतयता
पड़तनि कर जिजीर
अधरमे मूनि धरू मुसकान मुसुछि कऽ खसता सभ जानी ।
लजंती ई पावस रानी

भृकुटि कमान न तानिय सजनी
छूट पड़य नहि तीर
मुइनिहार तँ मरत, जियत जे
सँह कहत 'बेपीर'
थोर नहि रहि सकता मुरराज पजरती डाहे इन्द्राणी ।
लजंती ई पावस रानी

घन कुन्तल मुख 'चन्द्र'क ऊपर
आबि जखन छिड़िआय
पीत वसन तन जाँपल देखय
चपल चिहुँकि पड़ाय
भुदा सखि ! फोलू हृदयक मंच कि नाचब हम दुन प्राणी ।
लजंती ई पावस रानी